



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.com

मनुष्य जन्म को दुर्लभ कहा गया है। जिन्हें यह प्राप्त है, वे मनुष्य जन्म का मूल्यांकन करना सीखें।
- आचार्य श्री भिक्षु

नई दिल्ली

वर्ष 25 • अंक 29 • 22 - 28 अप्रैल, 2024



प्रत्येक सोमवार

प्रकाशन तिथि : 20-04-2024 • पेज 12

₹ 10 रुपये

शुभ परिणाम, विशुद्ध लेश्या हमारे भीतर में रहे : आचार्यश्री महाश्रमण

विक्रम संवत् 2081 के शुभारंभ में श्रुत संपन्न प्राध्यापक ने बताए अध्ययन के लाभ

शिरूर।

9 अप्रैल, 2024

चैत्र शुक्ला प्रतिपदा - नव वर्ष विक्रम संवत् 2081 का शुभारम्भ। आध्यात्म शक्ति संपन्न आचार्य श्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ आज शिरूर पधारे। युगपुरुष आचार्य प्रवर ने मंगल पावन पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि विद्यार्थी विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों में पढ़ते हैं। चारित्रात्मा भी शास्त्राभ्यास के रूप में अध्ययन करते हैं। प्रश्न होता है कि अध्ययन करने से क्या लाभ है ?

अध्ययन से पहला लाभ है- ज्ञान प्राप्ति।

अध्ययन का दूसरा लाभ है- एकाग्र चित्त होना।

तीसरा लाभ है- विद्यार्थी सन्मार्ग में स्थित हो जाए।

चौथा लाभ है- स्वयं सन्मार्ग में स्थित होकर दूसरों को भी सन्मार्ग में लाने का प्रयास करें।

ज्ञान एक पवित्र तत्त्व है। अध्यात्म



विद्या का ज्ञान तो आत्म कल्याण की दृष्टि से भी बहुत महत्वपूर्ण होता है। अध्ययन के लिए पुस्तकें व शिक्षक भी बहुत उपयोगी हैं। विद्यार्थी हो, पढ़ने की अभिलाषा हो, शिक्षक हो, सामग्री हो और स्थान भी हो, इन सभी सुविधाओं के मिलने से ज्ञान प्राप्ति में आसानी हो जाती है। बच्चे तो अध्ययन करते ही हैं, 60 वर्ष का व्यक्ति भी विद्यार्थी बन सकता है। ज्ञान ग्रहण करने में उम्र अवरोधक नहीं बनती है।

नव वर्ष के उपलक्ष में पूज्य प्रवर ने फरमाया कि आज नया वर्ष शुरू हुआ है।

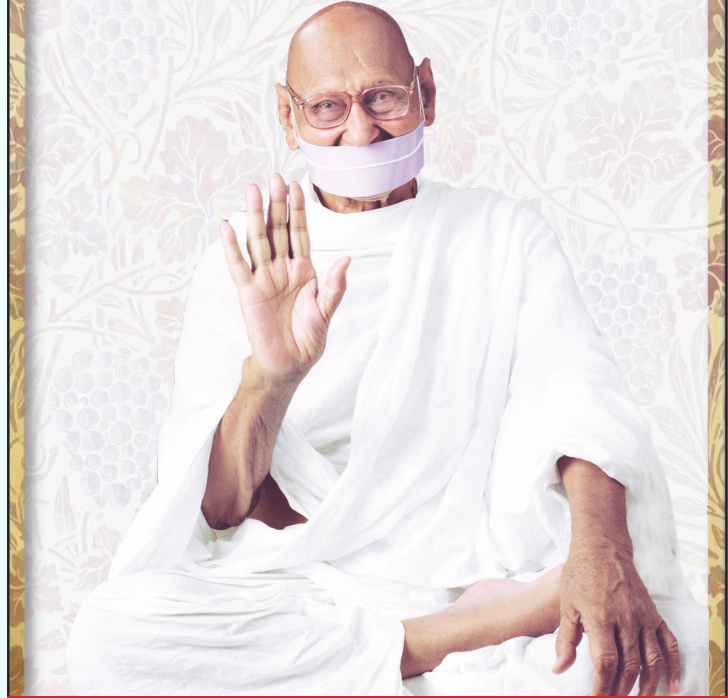
वि.सं. 2080 की विदाई हो गई और 21 वीं शताब्दी का नवमां दशक शुरू हो गया है। धार्मिक संदर्भों में विक्रम संवत् के अनुसार ही कार्यक्रमों का निर्धारण होता है। नव वर्ष पर मंगल पाठ भी उच्चरित किया जाता है।

मंगल पाठ पवित्र वाणी है जो हमारे कानों में पड़ती है, यह हमारे कानों के लिए भी और आत्मा के लिए भी अच्छी है। पूज्य प्रवर ने नव वर्ष 2081 के उपलक्ष में वृहद मंगल का समुच्चारण करवाया एवं सद् संकल्प ग्रहण करने हेतु अभिप्रेरित किया। (शेष पेज 2 पर)

युगप्रधान आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी

15वां महाप्रयाण दिवस

आपका पवित्र हृदय निर्मल करुणाभाव से परिपूर्ण है। आपके नेत्रों से अमृत के समान स्वच्छ अत्यधिक वात्सल्य प्रवाहित होता है। आपके मुख पर स्फुरित होने वाली यह प्रसन्नमुद्रा शान्ति उत्पन्न करने वाली है, ऐसे पूज्य गुरुवर महाप्रज्ञ तीर्थकर के तुल्य हैं।



श्रद्धावनतः अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स परिवार

परोपकार के लिए त्याग दें निज का स्वार्थ : आचार्यश्री महाश्रमण

केडगांव।

13 अप्रैल, 2024

पूज्य प्रवर का आज केडगांव पदार्पण हुआ। अमृत देशना प्रदान करते हुए युगप्रधान आचार्य प्रवर ने फरमाया कि मनुष्य जीवन हमें उपलब्ध है, चौरासी लाख जीव योनियों में छोटे-मोटे कई प्रकार के प्राणी होते हैं, उन चौरासी लाख योनियों में मनुष्य का जन्म महत्वपूर्ण होता है।

यही एक जीवन है, जहां से आत्मा परमात्मा के पद को प्राप्त कर सकती है। मनुष्य ही मरकर मोक्ष में जा सकता है, सर्व दुःख मुक्त हो सकता है।

यह महत्वपूर्ण जीवन हमें अभी प्राप्त

है, आदमी इस जीवन को गंवा दे, खो दे, कोई धर्म नहीं करे, पापाचार ज्यादा करे तो इस जीवन का सदुपयोग नहीं हो पाता है।

इस जीवन के बाद फिर कब मनुष्य जीवन मिलेगा, पता नहीं है। लंबे काल तक किसी को मिले भी नहीं, इसलिए हमें प्राप्त मनुष्य जन्म का अच्छा उपयोग करें, जिससे हमारी आत्मा मोक्ष की ओर अग्रसर हो सके। आत्मा को नरक या तिर्यंच गति में न जाना पड़े, दुर्गति से बच सकें, इसके लिए अध्यात्म के पथ पर चलने का प्रयास करें।

थोड़े लाभ के लिए ज्यादा नुकसान उठाना पड़े ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए। पैसे के लोभ से लाभ हो भी



सकता है पर बेईमानी से कमाया हुआ पैसा अशुद्ध होता है, इसलिए ईमानदारी रखनी चाहिए। गृहस्थ जीवन में सद्गुणों

का पालन करने का प्रयास करें। दूसरों को तकलीफ न दें, हो सके तो किसी का भला करें। पूज्य प्रवर ने कथानक

के माध्यम से प्रेरणा दी कि परोपकार के लिए हो सके तो अपने स्वार्थ का भी त्याग करें दें।

मनुष्य जन्म तो अपने आप में हीरा है, इसका हम धर्म-अध्यात्म में, त्याग-संयम के मार्ग पर चलने में, परोपकार में उपयोग करें तो हमारी आत्मा परमात्मा की दिशा में आगे बढ़ सकती है।

मुख्य प्रवचन से पूर्व, चैत्र शुक्ला पंचमी, नेपाली नव वर्ष के उपलक्ष में, परम पावन आचार्य प्रवर ने नेपाल में प्रवासित श्रावकों के लिए मंगल पाठ प्रदान करवाया। कडगांव बॉस्को ग्रामीण विकास केन्द्र के डायरेक्टर फादर जॉर्ज ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी भावना अभिव्यक्त की।

अहिंसा, संयम और तप की त्रिवेणी में होते रहें निष्णात : आचार्यश्री महाश्रमण

अहमदनगर।

14 अप्रैल, 2024

औरंगाबाद की ओर गतिमान जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम् अधिशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी अपनी धवल सेना के साथ अहमदनगर के अहमदनगर एज्यूकेशन सोसायटी परिसर में पधारे। विशाल जनमेदिनी को आर्हत वाणी का रसास्वाद कराते हुए परम पावन ने फरमाया कि जैन आगम दसवेआलियं के प्रथम श्लोक में मानों धर्म का सार भरा हुआ है। संक्षेप में धर्म की व्याख्या इसमें आ गयी है। आदमी मंगल चाहता है, मंगल की कामना स्वयं के लिए भी करता है तो मौके-मौके पर दूसरों के प्रति भी मंगल की कामना करता है।

शास्त्रकार ने कहा कि धर्म उत्कृष्ट मंगल है, धर्म से उत्तम और कोई मंगल नहीं होता। श्लोक में किसी धर्म का नाम नहीं है पर कहा गया कि अहिंसा, संयम और तप धर्म है। आध्यात्मिक रूप में सारा धर्म इन तीनों में समाविष्ट हो जाता है। आगे धर्म की महिमा बतायी गयी है कि जिसके मन में अहिंसा, संयम और तप रूपी धर्म रचा-पचा रहता है उसे



देवता भी नमस्कार करते हैं। साधु तो अहिंसामूर्ति, संयममूर्ति और तपोमूर्ति होते हैं, वे देवों के लिए पूजनीय हो सकते हैं। किसी भी धर्म को मानने वाला अहिंसा, संयम, तप की आराधना करता है, उसका मंगल होता है।

भगवान महावीर से जुड़ा हमारा धर्म शासन है, जैन धर्म में अहिंसा का सूक्ष्मता से पालन होता है। साधुओं के लिए अहिंसा महाव्रत निर्दिष्ट है। गृहस्थों में भी अहिंसा के प्रति जागरूकता रहती है। मुख वस्त्रिका से भी हम अहिंसा के

साथ वाणी संयम की प्रेरणा ले सकते हैं।

आज की दुनिया में मन, वचन, काय एवं इन्द्रियों का असंयम काफी बढ़ गया है। शिक्षण संस्थानों में विद्यार्थियों को संयम के संस्कार मिलते रहें। उनमें ईमानदारी, नशा मुक्ति की भावना रहे। सोशियल मीडिया के उपयोग का भी संयम हो। भौतिकता पर आध्यात्मिकता का कन्ट्रोल रहे। Want और Need के अंतर को समझते हुए इच्छाओं का परिमाण करें। इससे आत्मा का हित और मानसिक शांति भी रह सकती है।

जैनशासन में तपस्या का भी बहुत महत्व है। तपस्या के बारह प्रकार बताये गये हैं। तप से स्वयं को तपाने से चित्त की निर्मलता बढ़ती है। इस प्रकार अहिंसा, संयम और तप को उत्कृष्ट मंगल बताया गया है।

पूज्य प्रवर ने आगे फरमाया कि आनन्द ऋषिजी महाराज और आचार्य श्री तुलसी समकालीन रहे हैं। आचार्य श्री तुलसी का दिल्ली में उनसे सौहार्दपूर्ण मिलन हुआ था। जैन शासन में अहिंसा, संयम और तप का प्रचार-प्रसार होता है। खुद की आत्मा में अहिंसा, संयम और तप की भावना हो और दूसरों को भी अहिंसा, संयम और तप का सन्देश समझाने का प्रयास हो। जैन धर्म के अनुयायी विदेशों में रहते हैं। वहां भी धर्म का प्रचार-प्रसार हो। हमारे धर्म संघ से समणियां विदेशों में प्रवास करती हैं। वे वहां नयी पीढ़ी को जैनधर्म के संस्कार देने का प्रयास करती हैं। बालपीढ़ी में भी अच्छे संस्कार आए।

अहिंसा, संयम और तप रूपी त्रिवेणी में हम निष्णात होते रहे। अहिंसा की पालना के लिए रात्रि भोजन, जमीकंद से बचने का प्रयास करें। होटल, हॉस्टल

और हॉस्पिटल में भी भोजन की समीक्षा करें। घर-परिवार में भी शान्ति रहे, जीवन में सादगी रहे।

जीवन में सदगुण रूपी आभूषण रहे, ज्ञान-शिक्षा में विद्वता रहे। संयम के आभूषण के सामने भौतिक आभूषण बहुत छोटे हैं। जैन समाज में लौकिक सेवा के उपक्रम भी चलते हैं पर धर्म की अपनी महत्ता है, धर्म आत्म कल्याण कराने वाला है।

जीवन में अहिंसा धर्म, संयम धर्म और तप धर्म रहे। धन तो यहीं रहने वाला है पर धर्म का प्रभाव आगे भी साथ में जाने वाला है।

आचार्य प्रवर के स्वागत में विद्यार्थियों ने गीत की प्रस्तुति दी। अहमदनगर एज्यूकेशन सोसायटी की ओर से छाया ताई फिरोदिया, वासुपूज्य स्वामी शश्वेतांबर संघ की ओर से अशोक मुथा, संगीता बच्छावत, सुभाष नाहर, यश पटावरी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ महिला मंडल, छत्रपति संभाजीनगर ने गीत का सुमधुर संगान किया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

प्रथम पृष्ठ का शेष

शुभ परिणाम, विशुद्ध...

आचार्य प्रवर ने आगे कहा कि जो समय को रोका नहीं जा सकता, वह अपनी गति से चलता रहता है। हम काल का बढ़िया उपयोग करने का प्रयास करें। यह चिंतन करें कि हमें समय का सदुपयोग करना है। क्षण भर भी प्रमाद न करें, समय आने से पहले जागरूक रहें। एक वर्ष के कालमान में अनेकों लौकिक एवं लोकोत्तर त्योंहार आ जाते हैं। हम धार्मिक दृष्टि से ध्यान दें कि हमारी धार्मिक साधना अच्छी चले, हम आत्मोत्थान के लिए प्रयास कर सकें।

वर्ष शुभ योगों में, धर्म के साथ, साधना में बीतता है तो वह हमारे लिए तो शुभ हो सकता है। हम मन, वचन और काय की शुभ प्रवृत्ति करने का प्रयास करें। शुभ परिणाम, शुभ अध्यवसाय, विशुद्ध लेश्या हमारे भीतर में रहे। स्थानीय विद्यालय की ओर से शिरीष बरमेचा ने आचार्य प्रवर के स्वागत में अपने विचार व्यक्त किए।

मुख्य प्रवचन से पूर्व पूज्यप्रवर का स्थानकवासी श्रमण संघ के मंत्री कमल मुनि 'कमलेश' के साथ स्थानक भवन में आध्यात्मिक मिलन हुआ, वहां भी नव वर्ष के उपलक्ष में आचार्य प्रवर द्वारा मंगल पाठ का समुच्चारण किया गया।

अनेक चित्तों वाले मनुष्य की भावधारा रहे शुभ : आचार्यश्री महाश्रमण

कमरगांव।

12 अप्रैल, 2024

शान्त सौम्य मूर्ति आचार्य श्री महाश्रमणजी का आज प्रातः कमरगांव में पदार्पण हुआ। परम पावन ने पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान कराते हुए फरमाया कि यह पुरुष अनेक चित्तों वाला होता है। हमारे जीवन में भाषा की लब्धि भी होती है। कई मनुष्य वाणी की समस्या से युक्त होते हैं, पूरा बोल नहीं पाते हैं। वाणी हमारे जीवन में एक तत्त्व है।

शरीर से भी अनेक प्रवृत्तियां होती हैं, मन के द्वारा हम सोचते हैं, स्मृति करते हैं, कल्पना कर लेते हैं। मन की चंचलता ज्यादा है, मन में इतने भाव उभरते हैं, मानो चित्त के केनवास पर कोई चलचित्र दिखाई दे रहा है, नये-नये दृश्य उभरते रहते हैं। शास्त्रकार ने कहा कि पुरुष अनेक चित्तों वाला है, उसके विचार बदलते रहते हैं।

जैन दर्शन में लेश्या का वर्णन प्राप्त होता है। पच्चीस बोल में 17वां बोल है लेश्या छः। छः प्रकार की लेश्याएं हमारी भीतरी भावधारा की द्योतक हैं। सबसे खराब कृष्ण लेश्या की भावधारा है, फिर



नील व कापोत, उससे कुछ ठीक है, पर है अशुभ की कोटि में।

तेजोलेश्या, पद्मलेश्या और शुक्ल लेश्या शुभ की कोटि में आ जाती हैं। क्रमशः अशुद्धि कम होते हुए शुद्धि होती है शुक्ल लेश्या तो सबसे उत्कृष्ट लेश्या है, इस भावधारा में रहे तो लेश्या निर्मल रहती है।

पूज्य जयाचार्य ने झीणी चर्चा में लेश्या और योग का विश्लेषण किया है कि जहां लेश्या है, वहां योग है और जहां योग है वहां लेश्या भी होगी। दोनों में सहचरत्व है फिर भी कुछ अन्तर भी माना गया है।

हमारी भावधारा में परिवर्तन होता है। हम प्रयास करें कि परिवर्तन हो तो शुभ का शुभ में ही हो, अशुभ का शुभ में हो जाए, हम अशुभ भावधारा में न जायें।

जैसे चौदह गुणस्थानों को चौदह सीढ़ियां मान लें तो छः लेश्या को भी हम छः बड़ी सीढ़ियां मान सकते हैं। उदाहरण के तौर पर मंच पर जाने की सीढ़ियां छः लेश्या मानी जा सकती है तो उपरी मंजिल में जाने के लिए चौदह सीढ़ियों रूपी गुण स्थान है। हम ज्यादा से ज्यादा शुक्ल लेश्या में रहे और साधना करते-करते अलेश्य बन चौदहवें गुणस्थान में

पहुँच जायें। आत्मा अलेश्य बनी है तो अयोग भी बन जाती है। आश्चर्य की बात है कि पहले गुणस्थान में भी शुक्ल लेश्या हो सकती है और छठे गुण स्थान में भी कृष्ण लेश्या हो सकती है। कहा गया है कि भगवान महावीर भी जब छद्मस्थ अवस्था में थे तब उनमें भी छः लेश्या थी। पूज्य प्रवर ने उपस्थित ग्रामीण जनता को लक्ष्य कर कहा कि जीवन में ईमानदारी रखें, चोरी से बचने का प्रयास रहे।

अहिंसा की भावना रहे, हो सके तो किसी का कल्याण करने का प्रयास करें दूसरे को कष्ट नहीं पहुंचाएं। जीवन में नशामुक्ति-संयम रहे। अपना समय धार्मिक-आध्यात्मिक साधना में लगाएं। विचार और आचार अच्छा रहे, भावधारा-लेश्या शुभ रहे यह काम्य है।

पूज्यप्रवर के स्वागत में जिला परिषद स्कूल अध्यक्ष व पत्रकार हेमन्त साठे, स्कूल से मौली महाराज एवं सरपंच तुकाराम मात्रे ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ महाप्रयाण दिवस पर चारित्रात्माओं के उद्धार

अतीन्द्रिय ज्ञान के धनी थे आचार्यश्री महाप्रज्ञ

● मुनि कमलकुमार ●

जन्म और जीवन दोनों का महत्व होता है परंतु ऐसा योग कोई पुण्यात्मा भाग्यशाली को ही प्राप्त होता है। कई व्यक्तियों का जन्म तो उच्च कुल में होता है परंतु शरीर संपदा और संस्कार संपदा के अभाव में वे धन्यता की अनुभूति नहीं करते। जैसे मृगा लोढ़ा जिसका जन्म तो शाही परिवार में हुआ परंतु शरीर संपदा और संस्कार दोनों से शून्य सा रहा। इसका मुख्य कारण अपने कर्म को ही मानना चाहिए।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का जन्म राजस्थान के झुंझनू जिले के टमकोर के चौरडिया परिवार में पिता तोलारामजी माता बालू देवी की कुक्षि से हुआ। आपके जन्म से परिवार में हर्ष की लहर सी आ गई। परंतु लघुवय में पिताजी का स्वर्गवास सबके लिए असह्य हो गया। आयुष्य के आगे किसी का जोर नहीं चलता। परिवार में कमाने वाला कोई नहीं रहा तब माता बच्चों को लेकर पीहर चली गई। आपका ननिहाल सरदारशहर के पास खींवर में था, आपका पालन पोषण वहीं हुआ।

बड़े होने पर पारिवारिक जन टमकोर ले आये। उस समय टमकोर में मुनि छबील जी, मुनि मूलचंद जी का चौमासा था। आप अपनी माता के साथ दर्शन प्रवचन के लिए जाते मुनि मूलचंद जी का ध्यान आप पर केंद्रित हो गया और मुनिश्री ने आपको प्रारंभिक ज्ञान करवाया। आपकी ज्ञान के प्रति रुचि देखकर संत आगे से आगे सिखाते गये। उस समय बोल-बोल कर सिखाया जाता था। आपकी एकाग्रता को देखकर मूलचंदजी स्वामी ने एक दिन पूछा क्या दीक्षा लोगे? तब कहा- ले लूंगा। संतों का मन बढ़ता गया और सीखने का क्रम व्यवस्थित चलता रहा। संतों की सत्प्रेरणा से वैराग्य पुष्ट होता गया। संतों ने कहा दीक्षा लेनी है तो पहले गुरुदेव के दर्शन करो, अर्ज करो, तभी दीक्षा हो पाएगी।

आपने पूज्य कालूगणी के दर्शन प्रथम बार

गंगाशहर में किए और कालूगणी के दर्शन प्रवचन से आपका संकल्प और मजबूत हो गया। उस समय आपका मुनि तुलसी से परिचय हुआ और गहरा आत्मीय संबंध सा हो गया जो आचार्यश्री तुलसी के अंतिम समय तक बढ़ता ही रहा। आपने गंगाशहर में ही पूज्य कालूगणी के सामने दीक्षा की अर्ज की और कालूगणी ने आपकी तीव्र भावना देखकर साधु प्रतिक्रमण का आदेश दे दिया। आप जब टमकोर आये और सबने सुना कि साधु प्रतिक्रमण का आदेश मिल गया है तो परिवार और गांव में सबको खुशी हुई। संतों ने भी सोचा प्रयास सफल हो गया।

कालूगणी ने चतुर्मास के बाद सरदारशहर की ओर विहार किया और सरदारशहर से पूर्व ही मां-बेटे ने गुरुदेव के दर्शन कर दीक्षा की अर्ज की। कालूगणी ने अत्यन्त कृपाकर बालक नथमल की दीक्षा की घोषणा की तब बालक नथमल ने गुरुदेव से अपनी माता की दीक्षा की अर्ज की। परंतु गुरुदेव की मानसिकता उस समय बालू जी की दीक्षा के लिए नहीं थी, परंतु वहां उपस्थित गधैया जी के निवेदन पर मां-बेटे दोनों की दीक्षा की घोषणा की गई। सरदार शहर में सेठिया जी के बाग में आपकी दीक्षा हुई और दीक्षा के बाद आपको मुनि तुलसी के कुशल मार्गदर्शन में रहने का लंबा अवसर मिला। आपकी वैराग्य वृत्ति, विनम्रता, पाप भीरुता, अध्ययनशीलता, कर्तव्य परायणता दिनों दिन बढ़ती रही। कहावत भी है जैसा संग, वैसा रंग। वास्तव में यह कहावत इस प्रकार चरितार्थ हुई कि स्वयं आचार्यश्री तुलसी कई बार फरमाते कि मेरे महाप्रज्ञ को अतीन्द्रिय ज्ञान है। आपने मारवाड़ी, राजस्थानी ही नहीं, हिंदी, संस्कृत, प्राकृत में भी अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की। दिग्गज लोग आपको विवेकानंद ही नहीं योगीराज भी कहते। आपके द्वारा लिखित, संपादित आगम आदि अनेक ग्रंथ आज विद्वद वर्ग के लिए पठनीय संग्रहनीय बन गये। आपने गुरु का इतना विश्वास प्राप्त किया कि तेरापंथ समाज के लिए यह एक स्वर्णिम पृष्ठ बन गया कि आचार्य ने अपने रहते

हुए युवाचार्य को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित कर स्वयं पदमुक्त हो गये। आचार्य महाप्रज्ञ जी ने प्रेक्षाध्यान का आविष्कार कर जन-जन को जीने की कला सिखाई। बाबा रामदेव, श्री श्री रविशंकर महाराज भी गौरव के साथ सबको यह बताते हैं कि हमने ध्यान योग जो सीखा है वह आचार्यश्री तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञजी की कृपा का प्रसाद है।

जैन समाज में तेरापंथ को आज जो इतना सम्मान मिलता है वह आचार्यश्री तुलसी और आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की दूरदर्शिता, युगीन चिंतन, आगम संपादन, समन्वय पूर्ण नीति का ही परिणाम है। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का महनीय व्यक्तित्व आध्यात्मिक, वैज्ञानिक, राजनीतिक, औद्योगिक सबके लिए प्रेरणा बना। भारत के राष्ट्रपति अब्दुल कलाम जैसे व्यक्तित्व आपके परम भक्त बने। प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जैसे व्यक्तित्व आपके पाठक बने।

आपकी ही दूरदर्शिता से हमें वीतराग कल्प महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी जैसे गुरु का कुशल नेतृत्व मिला जो आज दिग्भ्रात अशांत व्यक्तियों के लिए प्रकाश स्तंभ कहा जा सकता है। आचार्य महाश्रमणजी की निर्भीकता, निश्चलता, निर्गर्विता, निजानंद लीनता देखकर दर्शक अपने भाग्य की सराहना करता है परंतु आचार्य महाप्रज्ञ जी का भी श्रद्धा से स्मरण करता है जिन्होंने एक योग्य और अनुपम व्यक्ति को अपना उत्तराधिकार सौंपकर संघ को निश्चित और दीर्घजीवी बना दिया। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के 15वें महाप्रयाण दिवस पर कामना करता हूँ कि आप हमें साधना में सतत् सहयोग प्रदान कराते रहें जिससे हमारा जीवन भी सार्थक और सफल हो सके। शरीर से विदा होना प्राकृतिक शाश्वत नियम है परंतु आपके युगीन चिंतन और तटस्थ, मध्यस्थ, आत्मस्थ, प्रशस्त भावधारा से लोग सदा आपका स्मरण करते रहेंगे और आपके स्मरण मात्र से आधि, व्याधि, उपाधि से मुक्त बन पूर्ण स्वस्थता और आनंद की अनुभूति करते रहेंगे।

प्रज्ञा के अवतारी प्रभुवर!

- साध्वी अणिमाश्री ●
- साध्वी सुधाप्रभा ●

बालूंदन, मालूभ्राता, तुमको आज बुलाएं हम।
प्रज्ञा के अवतारी प्रभुवर! प्रज्ञा का वर चाहें हम।।

तुलसी की अनुकृति बन गण का, गौरव शिखर चढ़ाया था।
निज प्रातिभ कौशल से तुमने, जस-इंड़ा फहराया था।
तुलसी पट्टधर महाप्रज्ञ, गुरुवर की महिमा गाएं हम।।

महाप्रज्ञ प्रभुवर को पाकर, भाग्य सराएं हम अपने।
ज्ञानामृत का पान कराकर, गण को तृप्त किया तुमने।
सदी बीसवीं के नायक को, श्रद्धा सुमन चढ़ाएं हम।।

अतीन्द्रिय चेतना तेरी जागृत, तुमने गण भंडार भरा।
मिला इशारा तुलसी प्रभु का, उसी दिशा में कदम धरा।
समर्पण के महासुमेरू! तुमसे ऊर्जा पाएं हम।।

पुण्यतिथि है आज तुम्हारी, स्मृतियां रह रहकर आए।
कहां गए वात्सल्य वारिधि, मनहर मूरत दिखलाए।
महाश्रमण में महाप्रज्ञ है, सबको आज बताएं हम।।

दो ऐसा आशीर्वर हमको, सदा बढाएं गण-सम्मान।
महाश्रमण प्रभु चरण-शरण में, फल जाएं सारे अरमान।
जयवंता यह भैक्षव-शासन, गण में मोद मनाएं हम।।

लय - कलियुग बैठा मार

महाप्रज्ञ गुरवे नमः

- साध्वी समत्वयशा ●

महाप्रज्ञ गुरवे नमः का आओ मिलकर जाप करें।
आज उन्हीं की स्मृतियों में हम प्रभु का ही सब ध्यान धरें।
गुरु तुलसी के पट्टधर, दसवें नायक हे गणिवर।।

प्रेक्षा दायक है दिनकर, गुरु तुलसी का आशीर्वर
बांटो प्रज्ञा जी भरकर, महाप्रज्ञवर हे गुरुवर

तुलसी चरणों में समर्पण तेरा विरल,
तेरे कदमों में खिलते रहें शतदल।

तेरे पदचिन्हों पर, करते जाएं सफर,
छू ले निश्चित हम अंबर,

पाया तुमसे अनुपम सिंचन खुद का अब निर्माण करें।।

सुरलोक तुम्हें क्या रास आ गया?
अपनी सारी सृष्टि रच विसरा दिया।

हमारी सांसें तेरे नाम, सब कुछ तुम पर कुर्बान,
जीवन सारा है अर्पण,
एक झलक पाने के खातिर इन प्राणों में जान भरें।।

सुना भक्त के वश में होते भगवान,
भक्तिमय प्रभु हम भक्तों के ये प्राण।

प्रभु आ जाओ ना, मत तरसाओ ना,
सुन लो यह दिल की पुकार,
आओ-आओ दर्श दिराओ हम मीठी मनुहार करें।।

लय - शिव शंकर को

मासिक अमावस्या पर जप, तप एवं स्वाध्याय

राजाजीनगर। जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी के 2550वें निर्वाणोत्सव के उपलक्ष्य में तेरापंथ धर्म संघ के एकादशम् अधिशास्ता युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा प्रत्येक मासिक अमावस्या को जप, तप एवं स्वाध्याय के इंगित अनुसार पंचम कार्यशाला का विशेष आयोजन तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा स्थानीय तेरापंथ भवन में किया गया।

प्रवक्ता उपासक महेंद्रकुमार दक ने सामूहिक नमस्कार महामंत्र का उच्चारण करवाते हुए कार्यक्रम का शुभारंभ किया। भगवान महावीर की स्तुति के पश्चात जप का क्रम संपन्न किया गया। तत्पश्चात् स्वाध्याय करवाते हुए आचार्यश्री महाप्रज्ञ द्वारा लिखित पुस्तक 'कैसी हो जीवन शैली' के अंतर्गत 9 सूत्र बताते हुए उनके बारे में विस्तार से समझाया।

उपासक राजमल बोहरा ने आचार्यश्री

महाप्रज्ञ द्वारा लिखित पुस्तक 'श्रमण महावीर' से भगवान के बाल्यावस्था के प्रसंगों से अहिंसा के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी।

स्वाध्याय के क्रम में उपासिका मंजू गन्ना ने आचार्यश्री महाप्रज्ञ द्वारा लिखित पुस्तक महावीर का पुनर्जन्म पुस्तक के आठवें अध्याय 'इंद्रिय संयम' से इंद्रियों के मित्र और शत्रु भाव को समझाया। कार्यक्रम को मंगलपाठ से सम्पन्न किया गया।



तेरापंथ महिला मंडल के विविध आयोजन



साउथ हावड़ा

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में साउथ हावड़ा महिला मंडल द्वारा राष्ट्रीय अध्यक्ष सरिता डागा की अध्यक्षता में 'लक्ष्य - संस्था के विकास का' क्षेत्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का आगाज अभातेमम की संरक्षिका 'नारी रत्न' तारा देवी सुराणा ने नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से किया।

स्थानीय अध्यक्ष चंद्रकांता पुगलिया ने सभी पदाधिकारीगण एवं संभागीय बहनों का स्वागत किया और अपने विचार रखे। नव-युवती बहनों ने प्रेरणा गीत एवं कन्या मंडल ने स्वागत गीत का संगान किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि हमारा मुख्य उद्देश्य है संस्कार निर्माण। महामंत्री नीतू ओस्तवाल ने अभातेमम के मुख्य योजनाओं और आगामी कार्यक्रमों की जानकारी देते हुए 'अच्छे कार्यकर्ताओं का निर्माण' विषय पर विचार प्रस्तुत किए। ट्रस्टी डॉ. सूरज बरडिया ने अपने वक्तव्य में सभी बहनों को उत्साह के साथ धर्म संघ के सभी कार्यक्रमों से जुड़ने की प्रेरणा दी। युवती बहनों ने एक लघु नाटिका द्वारा राष्ट्रीय अध्यक्ष के समक्ष अपने मन की बात रखी। अभातेमम

की ईस्ट जोन कोऑर्डिनेटर एवं साउथ हावड़ा कन्या मंडल संयोजिका जागृति चोरडिया ने अपने विचार रखे। सभा के मंत्री बसंत पटवारी ने कहा कि सभा और महिला मंडल एक दूसरे के पूरक हैं। कार्यशाला का कुशल संचालन स्थानीय मंत्री रेखा बैंगानी ने किया। आभार ज्ञापन उपाध्यक्ष सरिता सामसुखा ने किया। कार्यशाला में सभा, टीपीएफ एवं तेयुप के पदाधिकारीगण की भी विशेष उपस्थिति रही। कार्यशाला में लगभग 250 बहनों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम की सफलता में कार्यक्रम संयोजिका सरिता सामसुखा एवं सहसंयोजिका अंजू सिंधी का विशेष सहयोग रहा।

हैदराबाद

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल हैदराबाद के तत्वावधान में तेरापंथ कन्या मंडल हैदराबाद द्वारा आयोजित 'अन्वेषण' तेरापंथ की नौ साध्वीप्रमुखाओं पर एक परीक्षा मलकपेट के सुराना भवन में 'शासनश्री' साध्वी शिवमालाजी के सान्निध्य में आयोजित की गई। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र और साध्वीश्री के मंगल पाठ से हुआ। इस परीक्षा के माध्यम से धर्म संघ की साध्वी प्रमुखाओं के बारे में बहुत

कुछ जानने को मिला। परीक्षा में 12 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रभारी शीतल कोठारी द्वारा प्रश्न पत्र तैयार किया गया। सभी ने उत्साह और आनंद के साथ इसमें भाग लिया।

शिवकाशी

तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में हिन्दू नव वर्ष का आयोजन आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि रश्मिकुमार जी और मुनि प्रियांशु कुमार जी के सान्निध्य में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि रश्मिकुमार जी ने नमस्कार महामंत्र से किया एवं रक्षा कवच का अनुष्ठान करवाया। मुनिश्री ने भाव शुद्धि के बारे में बहुत ही सुंदर तरीके से सरल भाषा में बताया। कार्यक्रम के अंत में मुनिश्री ने वृहद मंगल पाठ का उच्चारण किया। वरिष्ठ श्रावक नौरतनमल डागा ने मुनिश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। संपत देवी डागा ने कविता के माध्यम से अपने भाव रखे। कार्यक्रम में सभा एवं महिला मंडल के पदाधिकारी तथा श्रावक समाज की अच्छी उपास्थिति रही।

कोयंबटूर

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला

मंडल कोयंबटूर ने 'कनेक्ट डोर टू डोर' के अंतर्गत सृजन एसोसिएशन संस्था के संयुक्त तत्वावधान में मंच संचालन की कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण से हुई महिला मंडल की बहनों ने मंगलाचरण किया। स्थानीय मंडल अध्यक्ष मंजू सेठिया ने आगंतुकों का स्वागत किया। सृजन संस्था के उपाध्यक्ष गुलाब मेहता एवं कन्या मंडल से स्नेहा बैद ने डॉ. आदित्य शुक्ल का परिचय प्रस्तुत किया। डॉ. आदित्य ने बहुत ही सरलता से मंच संचालन के गुर सिखाते हुए कहा कि संचालन निडर होकर करना चाहिए, श्रोता को ज्यादा महत्व देना चाहिए। उन्होंने समझाया कि श्रोता और वक्ता के बीच में मंच संचालक ही एक कड़ी है। युवती बहनों की अच्छी उपस्थिति रही। धन्यवाद ज्ञापन महिला मंडल मंत्री सुमन सुराणा ने किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन स्नेहा बैद ने किया।

नोखा

तेरापंथ भवन नोखा में शासन गौरव साध्वी राजीमती जी के सान्निध्य में एंपावरमेंट सेलिब्रैटिंग वूमनहुड का सफल आयोजन तेरापंथ महिला मंडल द्वारा किया गया, जिसमें 70 बहनों की उपस्थिति रही। महिला मंडल की बहनों

ने प्रेरणा गीत से कार्यक्रम का आगाज किया। नुक्कड़ नाटक का सफल मंचन हुआ। महिला मंडल अध्यक्ष सुमन मरोठी ने स्वागत करते हुए अपने विचार रखे। कार्यक्रम का कुशल संचालन सीमा घीया ने किया। तेरापंथ महिला मंडल नोखा की ओर से प्रेरणा सम्मान पुरस्कार चंचला देवी बैद को प्रदान किया गया।

इरोड

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल इरोड ने आदित्य मल्टी केयर हास्पिटल के साथ मिलकर कैंसर हेल्थ चेकअप कैंप का आयोजन किया। कार्यक्रम महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत के संगान के साथ शुरू हुआ। चिकित्सकों ने कैंसर की जांच एवं रोक के लिए उपायों की जानकारी दी। बताया गया कि इरोड में कैंसर के बढ़ते आंकड़ों ने इरोड को पूरे तमिलनाडु में दूसरे स्थान पर खड़ा कर दिया है, ऐसे में तेरापंथ महिला मंडल द्वारा शुरू की गई जागरूकता की मुहिम सराहनीय है। तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष पिंकी भंसाली एवं संरक्षिका द्वारा डॉक्टरों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में सभा, युवक परिषद् एवं महिला मंडल के पदाधिकारी एवं सदस्य उपस्थित थे।

प्लग इन विथ माँक में मिला जिज्ञासाओं का समाधान

गंगाशहर।

तेरापंथ युवक परिषद् एवं तेरापंथ किशोर मंडल गंगाशहर द्वारा तेरापंथ भवन गंगाशहर में एक रोचक एवं ज्ञानवर्धक कार्यक्रम 'प्लग इन विथ माँक' का आयोजन साध्वी चरिताप्रभा जी एवं साध्वी प्रांजलप्रभा जी के सान्निध्य में किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत साध्वी गौतमप्रभा जी के मंगल अनुष्ठान से हुयी। साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने रोचक गतिविधियों के माध्यम से उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं को कार्यक्रम से जोड़ा। इसके पश्चात ब्लू ब्रिगेड सदस्य कुलदीप छाजेड़ ने कार्यक्रम को दो चरणों में आगे बढ़ाया। जिसमें प्रथम चरण में देश भर से गूगल फॉर्म के

माध्यम से आए प्रश्न एवं दूसरे चरण में उपस्थित श्रोताओं ने लाइव अपने प्रश्न साध्वी द्वय से पूछे।

साध्वी वृंद ने पैसा बड़ा या भगवान? मैं कौन हूँ और मेरे जीवन का उद्देश्य क्या है? अध्यात्म और वैराग्य में अंतर, जैसे अनेक रोचक प्रश्नों का समाधान प्रस्तुत किया। साध्वी प्रांजल प्रभा जी ने कहा कि आध्यात्मिक विकास से संस्कारों के गिरते ग्राफ को रोका जा सकता है। आत्मिक शांति के लिए जीवन में आध्यात्मिकता का होना जरूरी है।

साध्वी चरिताप्रभा जी ने असफलता से निराश न होने की प्रेरणा देते हुए कहा कि यदि जीवन में कभी भी अवसाद जैसी स्थिति बने तो साधु-साध्वियों के पास जाकर उनसे चर्चा करनी चाहिए इससे भी उन्हें अपने जीवन की बहुत सी

समस्याओं का समाधान मिल सकता है। साध्वीश्री ने युवक परिषद् एवम् किशोर मंडल के सदस्यों की मेहनत एवं लगन की प्रशंसा की एवं और अधिक कार्य करने की प्रेरणा दी।

कार्यक्रम में बीकानेर के अनेकों विद्यार्थी, प्रिंसिपल एवं अध्यापक गण उपस्थित थे। कार्यक्रम में जैन संस्कारक बने रोहित बैद का भी सम्मान परिषद् द्वारा किया गया।

मंत्री भरत गोलछा ने बताया कि कार्यक्रम के लिए तेयुप के निर्देशन में किशोर मंडल की पूरी टीम कार्यक्रम को सफल बनाने की तैयारियों में लगी हुई थी। कार्यक्रम में समाज के गणमान्य लोग और विभिन्न सभा संस्थाओं के पदाधिकारी भी उपस्थित थे।

'तैयारी जीत की' करियर काउंसलिंग कार्यक्रम आयोजित

चेन्नई।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, चेन्नई एवं डीएफसी के संयुक्त तत्वावधान में चेन्नई के लक्ष्मी महल में 'तैयारी जीत की' करियर काउंसलिंग कार्यक्रम आयोजित किया गया। 14 साल से ऊपर के बच्चे भविष्य में किस दिशा की ओर जायें, 10वीं के बाद कौन से विषयों का चयन करें या कौन से क्षेत्र में अपनी प्रतिभा को निखारे- इन प्रश्नों को समाहित करने के उद्देश्य से आयोजित इस कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई।

मंगलाचरण के पश्चात टीपीएफ अध्यक्ष प्रसन्न बोथरा एवं डीएफसी अध्यक्ष पिंकी भंडारी द्वारा आगंतुकों का स्वागत किया गया। टीपीएफ नेशनल टीम के दिनेश धोखा ने मोटिवेशन एवं माइंडसेट विषय पर प्रकाश डाला

गया। महालक्ष्मी नारायण प्रसाद ने जाँब एवं करियर में अंतर, करियर के चुनाव में महत्वपूर्ण घटक आदि के बारे में बच्चों के साथ अपने अनुभव साझा किए। इंजीनियरिंग, डाटा साइंटिस्ट, एडवोकेट, साइकोलॉजी, सीए, सीएस, सीएफए, यूपीएससी, फैशन डिजाइनिंग, इंटीरियर डिजाइनिंग, डिजिटल मार्केटिंग, सोशल मीडिया, डॉक्टर, जर्नलिज्म, एंटरप्रेन्योर्स, आर्किटेक्ट जैसे विविध महत्वपूर्ण करियर्स को कौन कर सकता है, कब कर सकता है, कैसे कर सकता है और करने के बाद जीवन में सफलतम कैसे बन सकते हैं- इन सब मुद्दों पर पीपीटी प्रेजेंटेशन द्वारा कई प्रोफेशनल्स ने अपने अनुभवों को साझा किया। अभिभावकों एवं बच्चों ने इस कार्यक्रम से बहुत कुछ प्राप्त किया।

कार्यक्रम का संचालन विवेक बोथरा ने किया।

संक्षिप्त खबर

हृदय जांच शिविर का आयोजन

बेंगलुरु। आँकड़ों के अनुसार भारत में 27 प्रतिशत मृत्यु हृदय संबंधित रोगों के प्रभाव से होती है। तेरापंथ युवक परिषद् बेंगलुरु पिछले 12 वर्षों से आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर एंड डेंटल केयर के माध्यम से स्वास्थ्य के प्रति समाज में जागरूकता बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयत्नशील रही है।

इस वर्ष भी विश्व स्वास्थ्य दिवस के उपलक्ष्य पर तेरापंथ युवक परिषद् बेंगलुरु द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर राजाजीनागर, आडुगोड़ी एवं पैलेस गुटहल्ली में रियायती दर पर हृदय जांच शिविर का आयोजन हुआ। इस विशेष शिविर में कुल 38 लाभार्थी रहे। शिविर के आयोजन में पदाधिकारियों एवं संयोजकों के साथ प्रतीक जोगड एवं प्रवीण बोहरा का विशेष सहयोग रहा।

बृहद् मंगल पाठ श्रवण से मिलती है ऊर्जा

काँदिवली, मुंबई। युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की विदुषी शिष्या शासनश्री साध्वी विद्यावतीजी 'द्वितीय' ठाणा 5 के सान्निध्य में भारतीय संस्कृति के अनुसार नव संवत्सर के अवसर पर बृहद् मंगल पाठ का विशेष आयोजन आयोजित हुआ। सर्वप्रथम नमस्कार महामंत्र का जप सामूहिक रूप से किया गया तत्पश्चात साध्वी प्रियंवदा जी ने आज के दिन की महत्ता पर संक्षिप्त उद्गार व्यक्त किये। साध्वी प्रेरणाश्री जी, साध्वी मृदुयशा जी एवं साध्वी ऋद्धियशा जी ने समवेत स्वरों में कई प्रभावशाली मंत्रों का उच्चारण किया। स्तुति परक श्लोकों को उच्चारित करवाकर समुपस्थित जनसमूह को भक्ति एवं श्रद्धा से सराबोर कर दिया।

साध्वी विद्यावती जी ने कहा- विक्रम संवत् 2081 चैत्र शुक्ला एकम नये वर्ष के शुभारंभ का दिन है। पूरा वर्ष हमारे लिए आनंदमय, एवं मंगलमय हो इसलिए मंत्रों का श्रवण किया जाता है। नवरात्रि का प्रथम दिन काफी महत्त्वपूर्ण होता है। सब अपने भीतर की शक्ति को जागृत करें। इस अवसर पर तेरापंथ सभा, तेरापंथ युवक परिषद्, तेरापंथ महिला मंडल के पदाधिकारी एवं श्रावक समाज अच्छी संख्या में उपस्थित थे। अंत में बृहद् मंगल पाठ एवं जय घोष के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

चारित्र आत्माओं का हुआ आध्यात्मिक मिलन

हुबली। मुनि मोहजीत कुमार जी एवं साध्वी पावनप्रभा जी, साध्वी सिद्धप्रभा का आध्यात्मिक मिलन श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा भवन, हुबली में हुआ। साध्वी पावनप्रभा जी एवं साध्वी सिद्धप्रभा जी मुंबई से हुबली तक पिछले 50 दिन में लगभग 650 किलोमीटर का विहार करते हुए तेरापंथ भवन हुबली पधारे जहां मुनि मोहजीतकुमार जी एवं साध्वी वृंद का आध्यात्मिक मिलन हुआ। इस कार्यक्रम में विजयनगर बेंगलुरु सभा अध्यक्ष प्रकाश गांधी, महिला मंडल अध्यक्ष मंजू गादिया, उपाध्यक्ष सुमित्रा बरडिया एवं आसपास के क्षेत्रों से श्रावक-श्राविका समाज एवं हुबली का श्रावक समाज उपस्थित था।

मुनि मोहजीतकुमार जी ने कहा कि तेरापंथ धर्म संघ में चारित्र आत्माओं का आध्यात्मिक मिलन किसी महोत्सव से कम नहीं होता है। साध्वी पावनप्रभा जी, साध्वी सिद्धप्रभा जी ने विहार की जानकारी सदन में रखी एवं साध्वी पावनप्रभा जी ने कहा विजयनगर, बेंगलुरु सभा और हीरियूर सभा ने संयुक्त रूप से विहार सेवा का दायित्व सजगता से संभाला है। सभी साध्वी वृंद ने सामूहिक गीतिका का संगान किया। इस अवसर पर विजयनगर सभा अध्यक्ष प्रकाश गांधी ने सभी चारित्र आत्माओं के उत्तम स्वास्थ्य की सुख साता पृष्ठते हुए आगामी विहार की मंगलकामना संप्रेषित की। कार्यक्रम का सफल संचालन हुबली सभा के मंत्री केसरचन्द गोलछा ने किया।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन

जैन विधि-अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

■ **कोलकाता।** चाड़वास निवासी कोलकाता प्रवासी सुमन देवी - नोरतन मल बैद के सुपौत्र, प्रियंका - प्रभास बैद के सुपुत्र का नामकरण संस्कारक सुभाष दुगड़ एवं हेमराज राखेचा ने विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपादित करवाया। संस्कारकों द्वारा त्याग प्रत्याख्यान की विशेष प्रेरणा दी गई

■ **पूर्वांचल कोलकाता।** देशनोक निवासी पूर्वांचल कोलकाता प्रवासी पंकज आंचलिया (सुपुत्र प्रकाश चंद आंचलिया - विमला देवी आंचलिया) एवं मनीषा आंचलिया (सुपुत्री मालचंद नोलखा - मोनिका नोलखा) के पुत्री का नामकरण जैन संस्कार विधि से सॉल्टलेक, कोलकाता में हुआ। जैन संस्कारक सुरेन्द्र सेठिया एवं अनूप गंग ने कार्यक्रम संचालित किया और सभी को जैन संस्कार विधि के महत्व को समझाया।

नूतन प्रतिष्ठान

■ **राजाजीनगर।** मंजूनाथनगर स्थित रनीत कोठारी के नूतन प्रतिष्ठान 'अरिहंत होम अप्लायंसेज' का जैन संस्कार विधि से शुभारंभ किया गया। संस्कारक राजेश देरासरिया ने मंगल भावना यंत्र एवं जैन संस्कार विधि की महत्ता का विश्लेषण करते हुए विभिन्न मंगल मंत्रोच्चार के द्वारा विधि को मंगलपाठ से संपन्न करवाया।

नूतन गृह प्रवेश

■ **सूरत।** सायरा निवासी सूरत प्रवासी जेसराज मेहता के सुपुत्र रमेश कुमार मेहता का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक प्रकाश डाकलिया एवं नरेन्द्र भंसाली ने सम्पूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया। संस्कारकों की प्रेरणा से उपस्थित व्यक्तियों ने अपनी भावना अनुसार त्याग प्रत्याख्यान किए।

शासनमाता की वार्षिक पुण्यतिथि का आयोजन

श्रद्धा भक्ति व समर्पण की मशाल का नाम है शासनमाता : साध्वी अणिमाश्री

फरीदाबाद ।

साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में फरीदाबाद तेरापंथ भवन में शासनमाता साध्वीप्रमुखा श्री कनकप्रभाजी की द्वितीय वार्षिक पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि कार्यक्रम आयोजित हुआ।

साध्वी अणिमाश्रीजी ने अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा- दुनिया में कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो उजालों में जन्म लेते हैं, उजाले का जीवन जीते हैं, अपने कर्तव्य से जग को उजाला बांटते हैं एवं अंत में उजाले में विलीन हो जाते हैं। ऐसे आलोकमय व्यक्तियों की श्रृंखला में एक नाम है शासनमाता का। शासनमाता तेरापंथ धर्मसंघ में दीक्षित हुईं। तेरापंथ आलोक का पर्याय है।

आलोक पुंज आचार्य श्री तुलसी ने उनके जीवन को आलोक से आपूरित किया एवं उन्होंने अपने कर्तव्य का उजास दुनिया में बांटा और आज के दिन ज्योति में विलीन हो गईं। उनका जीवन श्रम की दीपशिखा था। उनके हाथ में गुरुभक्ति, श्रद्धा व समर्पण की मशाल थी। उन्होंने मन मंदिर में विवेक का दीप प्रज्वलित कर रखा था। इन गुणों की बदौलत उनका जीवन आलोकमय बन गया।

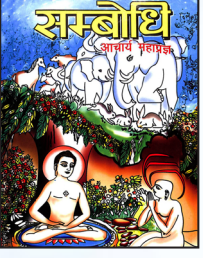
साध्वी कर्णिकाश्रीजी ने श्रद्धाभिव्यक्ति देते हुए कहा- साहस की महाज्योत का नाम है- साध्वीप्रमुखाश्रीजी। उनके साहस के नगमें आज भी धर्मसंघ में अनुगूजित हो रहे हैं।

डॉ. साध्वी सुधाप्रभाजी ने कहा- साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने अपने जीवन में

जीएसटी लागू कर रखी थी, अर्थात् गुड थिंकिंग, सिंपल लिविंग एवं टाईम मैनेजमेंट। साध्वी प्रमुखाश्रीजी की सोच अच्छी व ऊंची थी, उनका जीवन सादगीपूर्ण था और उनका समय प्रबंधन गजब का था।

साध्वी समत्वयशाजी ने सुमधुर गीत के द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित की। साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने मंच संचालन करते हुए कहा- वात्सल्य की गंगोत्री का नाम है शासनमाता। प्रतिभा, प्रेरणा व पुरुषार्थ के संगम स्थल का नाम है- शासनमाता। तेयुप अध्यक्ष गौतम गोलछा, टीपीएफ अध्यक्ष राकेश जैन, नार्थ जोन टीपीएफ के अध्यक्ष विजय नाहटा, तेरापंथ महिला मंडल उपाध्यक्ष सूर्यकांता बैद ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। तेरापंथ महिला मंडल की बहिनों ने मंगल संगान किया।

संबोधि



साध्य-साधन- संज्ञान

'शांत होकर सीधे बैठ जाओ या लेट जाओ और कल्पना करो कि जनन- शक्ति को नीचे से खींचकर ऊपर सौर्यकेन्द्र में ला रहे हैं, जहां यह जन्मशक्ति परिवर्तित होकर प्राणरूप में संचित रहेगी। ध्यान शक्ति पर रहे। काम की कल्पना न होए अगर आ जाये तो चिंता न करें। इस कल्पना के साथ अब तालयुक्त सम मात्रा में श्वास लें। प्रत्येक श्वास में मैं शक्ति को ऊपर खींच रहा हूँ और दृढ़ इच्छा से आज्ञा दो कि शक्ति जननेन्द्रिय से खिंच कर सौर्य- केन्द्र में चली आये। यदि ताल ठीक जम गया और कल्पना स्पष्ट हो गयी होगी तो यह स्पष्ट पता चलेगा कि शक्ति ऊपर आ रही है और उसकी उत्तेजना का अनुभव भी हो रहा है। यदि मानसिक बल बढ़ाना हो तो शक्ति को मस्तिष्क में भेजो, उसी के अनुकूल आज्ञा दो और कल्पना करो। प्रत्येक श्वास में शक्ति को ऊपर खींचो और प्रत्येक निश्वास में निर्दिष्ट स्थान पर भेजो। इससे आवश्यक शक्ति कार्य में योजित होगी और शेष सौर्य-केन्द्र में संचित रहेगी।

वीर्य न ऊपर खींचा जाता है और न परिवर्तित होता है, किन्तु उसकी प्राण शक्ति ही खींची जाती है। इस अभ्यास के समय सिर को थोड़ा आगे सरलतापूर्वक झुका लेना अच्छा होगा।

भोजन शक्ति देता है। जब शक्ति से व्यक्ति भरता है तब उसका स्व-नियंत्रण नहीं रहता। उत्तेजना पैदा होती है और उसका उपयोग उचित या अनुचित किसी भी तरह हो, यह संभव है। वैज्ञानिक कहते हैं- मौलिक जीवाणु अमीबा है। अमीबा स्त्री-पुरुष दोनों में है। उसमें जनन प्रक्रिया अद्भुत है। वह सिर्फ भोजन करता है। शक्ति मिलने से टूटता है और दो में विभक्त हो जाता है। वे दोनों भी स्त्री-पुरुष दोनों हैं। फिर वे भोजन करते हैं, शक्ति बढ़ती है। शक्ति बढ़ने से दो टुकड़ों में विभक्त होकर अमीबा जन्म देता है। और आदमी में शक्ति बढ़ने से मिलता है। वासना जागती है, वह जो मिलन में सुख होता है- वह दो के मिलन-जुड़ने से होता है। भोजन सर्वथा छोड़ना शक्य नहीं है। इसलिए यहां कहा है कि साधक वैसा भोजन न करे; जिससे विकृति को उत्तेजना मिले। वह निम्नोक्त तथ्यों पर ध्यान दे-

१. चालू भोजन में परिवर्तन करे। वह गरिष्ठ रसयुक्त और उत्तेजनात्मक भोजन को छोड़कर निस्सार और रूखा भोजन करे।

२. भोज्य-पदार्थों में कमी करे और मात्रा से कम खाए। अधिक चीजें और अधिक भोजन दोनों ही स्वास्थ्य और साधना के शत्रु हैं।

३. कायोत्सर्ग करे - बार-बार शरीर का उत्सर्ग करने वाले व्यक्ति पर बाहरी परिस्थितियों का कोई असर नहीं होता।

४. एक स्थान पर सदा न रहे - एक स्थान पर अधिक रहने से स्थानीय व्यक्तियों के साथ ममत्व हो जाता है।

५. आहार का त्याग करे - काम-विकार यदि उग्र रूप से पीड़ित करने लगे तो साधक भोजन का भी निषेध करे। भोजन के न मिलने पर शरीर स्वयं ही शांत हो जाता है। शरीर की निश्चलता से मन भी उपशांत हो जाता है।

१७. श्रद्धां कश्चिद् व्रजेत् पूर्व पश्चात् संशयमृच्छति।
पूर्व श्रद्धां न यात्यन्तः पश्चाच्छ्रद्धां निषेवते॥

१८. पूर्व पश्चात् परः कश्चित् श्रद्धां स्पृशति नो जनः।
पूर्व पश्चात् परः कश्चित् सम्यक् श्रद्धां निषेवते॥

(युग्मम्)

कोई पहले श्रद्धालु होता है और फिर लक्ष्य के प्रति संदिग्ध बन जाता है। कोई पहले संदेहशील होता है और पीछे श्रद्धालु। कोई न पहले श्रद्धालु होता है और न पीछे भी। कोई पहले भी श्रद्धालु होता है और पीछे भी।

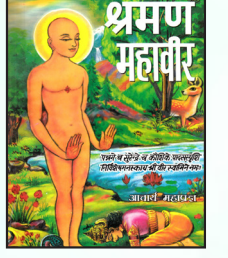
(क्रमशः)

श्रमण महावीर



-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

असंग्रह का वातायन : अभय का उच्छ्वास



मैंने मृदु-मंद स्वर में कहा, 'यह शरीर धर्म का आद्य साधन है। शरीर ही धर्म का आद्य साधन नहीं है, वह शरीर धर्म का आद्य साधन है जो आसक्ति के नागपाश से मुक्त हो चुका है।'

हमारी यात्रा समस्वरता में सम्पन्न हो गई। भगवान् के शरीर पर वह दिव्य दूष्य उपेक्षा के दिन बिता रहा था। न भगवान् उसका परिकर्म कर रहे थे और न वह उनकी शोभा बढ़ा रहा था।

साधना का दूसरा वर्ष और पहला मास। भगवान् दक्षिण वाचाला से उत्तर वाचाला को जा रहे थे। दोनों सन्निवेशों के बीच में दो नदियां बह रही थीं- सुवर्णाबालुका और रूप्यबालुका। सुवर्णाबालुका के किनारे पर कंटिली झाड़ियां थीं। भगवान् उनके पास होकर गुजर रहे थे। भगवान् के शरीर पर पड़ा हुआ वस्त्र कंटों में उलझ गया। भगवान् रुके नहीं, वह शरीर से उतर नीचे गिर गया। भगवान् ने उस पर एक दृष्टि डाली और उनके चरण आगे बढ़ गए।

भगवान् के पास अपना बताने के लिए केवल शरीर था और वास्तव में उनका अपना था चैतन्य। वह चैतन्य जिसके दोनों पाइरों में निरन्तर प्रवाहित हो रहे हैं दो निर्झर। एक का नाम है आनन्द और दूसरे का नाम है वीर्य।

पहले शरीर के साथ प्रेम का सम्बन्ध था, अब उसके साथ विनिमय का सम्बन्ध है। पहले उधार का व्यापार चल रहा था, अब नकद का व्यापार चल रहा है। भगवान् का अधिकांश समय ध्यान में बीतता है। वे बहुत कम खाते हैं, उतना-सा खाते हैं जिससे यह गाड़ी चलती रहे।

शरीर के साथ उनके सम्बन्ध बहुत स्वस्थ थे। वे उसे आवश्यक पोषण देते थे और वह उन्हें आवश्यक शक्ति देता था। वे उसे अनावश्यक पोषण नहीं देते थे और वह उन्हें अनावश्यक (विकारक, उत्तेजक या उन्मादक) शक्ति नहीं देता था।

भगवान् का अपना कोई घर नहीं था। उनका अधिकतम आवास शून्यगृह, देवालय, उद्यान और अरण्य में होता था। कभी-कभी श्रमशान में भी रहते थे। साधना के प्रथम वर्ष में वे कोल्लाग सन्निवेश से मोराक सन्निवेश पहुंचे। उसके बहिर्भाग में घुमक्कड़ तापसों का आश्रम था। वे वहां गए। आश्रम का कुलपति भगवान् के पिता सिद्धार्थ का मित्र था। वह भगवान् को पहचानता था। एक तापस ने भगवान् को आश्रम में आते हुए देखा। उसने कुलपति को सूचना दी। वह अपने साधना-कुटीर से बाहर आया। उसने महावीर को पहचान लिया। वह आतिथ्य के लिए सामने गया। दोनों ने एक-दूसरे का अभिवादन किया।

कुलपति के निवेदन पर महावीर एक दिन वहीं रहे। दूसरे दिन वे आगे के लिए प्रस्थान करने लगे। कुलपति ने कहा, 'मुनिवर! यह आश्रम आपका ही है। आप इसमें निःसंकोच भाव से रहें। अभी आप प्रस्थान के लिए प्रस्तुत हैं। मैं आपकी इच्छा में विघ्न उपस्थित नहीं करूंगा। मेरी हार्दिक इच्छा है कि आप इस वर्ष का वर्षावास यहीं बिताएं।'

महावीर वहां से चले। कई महीनों तक आसपास के प्रदेश में घूमे। आश्रम से बंधकर गए थे, अतः वर्षावास के प्रारम्भ में पुनः वहीं लौट आए। इसे आश्चर्य ही मानना होगा कि अपनी धुन में अलख जगाने वाला एक स्वतंत्रता-प्रेमी साधक कुलपति के बंधन में बंध गया।

कुलपति ने महावीर को एक झोपड़ी दे दी। वे वहां रहने लगे। उनके सामने एक ही कार्य था और वह था ध्यान-भीतर की गहराइयों में गोते लगाना और संस्कारों की परतों के नीचे दबे हुए अस्तित्व का साक्षात्कार करना। वे अपनी झोपड़ी की ओर भी ध्यान नहीं देते तब आवासीय झोपड़ी की ओर ध्यान देने की उनसे आशा ही कैसे की जा सकती थी? महावीर की यह उदासीनता झोपड़ी के अधिकारी तापस को खलने लगी। उसने महावीर से अनुरोध किया, 'आप झोपड़ी की सार-संभाल किया करें।'

समय का चरण आगे बढ़ा। बादल आकाश में घिर गए। रिमझिम रिमझिम बूंदें गिरने लगीं। ग्रीष्म ने अपना मुंह वर्षा के अवगुंठन से ढक लिया। उसके द्वारा पुरस्कृत ताप शीत में बदल गया। भूमि के कण-कण में रोमांच हो आया। उसका हरित परिधान बरबस आखों को अपनी ओर खींचने लगा।

(क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल



धर्म है
उत्कृष्ट मंगल

आचार्य महाश्रमण

-आचार्यश्री महाश्रमण खाद्यसंयम का प्रयोग



(पिछला शेष)

भोजन के साथ विभिन्न प्रकारों से ऊनोदरी को जोड़ा जा सकता है। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं-

१. अल्प मात्रा- भोजन की मात्रा कम करना। कुछ भूख रहे उसी स्थिति में भोजन छोड़ देना।

२. अल्प द्रव्य- भोजन में द्रव्यों की सीमा करना, नौ, ग्यारह, पन्द्रह आदि द्रव्यों से अधिक न खाना।

३. अनध्यशन - बार-बार न खाना। एक बार प्रातराश अथवा भोजन के बाद चार-पांच घण्टे तक कुछ भी न खाने का संकल्प करना, प्रहरतप करना, रात्रि भोजन न करना, प्रातः नमस्कार संहिता (नवकारसी) आदि करना।

उपवास में तो खाना सर्वथा छूट जाता है पर भोजन करते समय खाने का संयम करना, जिह्वा पर नियंत्रण रखना भी एक कठिन तपस्या है।

द्रव्य ऊनोदरी और भाव ऊनोदरी (क्रोध, लोभ आदि का परिहार) की साधना अच्छी चले तो हम मोक्ष को ओर गतिमान्, प्रगतिमान् हो सकते हैं। उस स्थिति में शारीरिक दौर्बल्य आदि के कारण बड़ी तपस्या का न होना भी मोक्ष में बाधक नहीं बनता है। इस महामहिम ऊनोदरी तप के व्यापक परिप्रेक्ष्य में यह कहना भी असंगत नहीं लगता कि 'खाते-पीते मोक्ष' सम्भव है।

संकल्प का प्रयोग

अभिग्रह तप

मनुष्य में जितनी क्षमता होती है उतना उसका उपयोग नहीं होता। उसका एक कारण है संकल्प का अभाव। कल्पना जब तक कल्पना रहती है वह संकल्प नहीं बनती। जब वह स्थिरता और निश्चितता तक पहुंच जाती है तो संकल्प बन जाती है। संकल्प एक शक्ति है। उसका प्रयोग रचना और विध्वंस दोनों में किया जा सकता है। यह व्यक्ति के विवेक पर निर्भर है कि वह उसका उपयोग किस दिशा में करता है। दृढसंकल्पी के लिए दुष्कर कुछ नहीं होता। इसी भाव का प्राकृत साहित्य का एक सूक्त मननीय है- 'निच्छय ववसियस्स एत्थं कि दुक्करं करणयाए।'

युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया। वह व्रत और संकल्प की चेतना को विकसित करने का प्रयोग है, छोटे-छोटे संकल्पों द्वारा व्यक्ति-निर्माण और स्वस्थ समाज संरचना को प्रक्रिया है।

महामना आचार्य भिक्षु महनीय संकल्प-चेतना के धनी थे। उन्होंने धर्म-क्रांति की। उसकी पृष्ठभूमि में उनका संकल्प-बल था। उसके बिना वह संभव नहीं था। उनकी इस संकल्प-चेतना के उद्बुद्ध होने में निमित्त बना एक रात्रि का तीव्र ज्वर। उससे उन्हें बोध-पाठ मिला। वे धर्म-क्रांति के लिए कृत-संकल्प हो गए।

अनाथी मुनि ने यौवन में भरे-पूरे सम्पन्न परिवार को छोड़ साधुत्व स्वीकार किया। उनकी संकल्पचेतना जागृत हो गई थी। उसमें निमित्त बनी उनकी आंखों की वेदना। कोई भी चिकित्सक और स्वजन उनकी दहला देने वाली वेदना को मिटा नहीं सका। उन्होंने अशरणता और अत्राणता की वास्तविकता को पहचाना और आत्म तत्त्व को पाने के लिए उद्यत हो गए।

निश्चय-शक्ति-सम्पन्न, पौरुष के प्रतीक पुरुषों की यशोगाथा नीतिकारों ने भी गाई है 'विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः, प्रारब्धमुत्तमजना न परित्यजन्ति' बार-बार विघ्न-बाधाओं से प्रताड़ित होने पर भी उत्तम (दृढसंकल्पी) मनुष्य अपने प्रारम्भ किए हुए कार्य को बीच में नहीं छोड़ते। अभ्यास और प्रयोग के द्वारा अपनी संकल्प-शक्ति को बढ़ाया भी जा सकता है। उसके विभिन्न उपक्रम हैं।

निर्जरा के बारह भेदों में तीसरा भेद है भिक्षाचर्या। इसे वृत्तिसंक्षेप, वृत्तिसंख्यान और वृत्तिपरिसंख्यान भी कहा जाता है। इसमें 'अभिग्रह' स्वीकार किया जाता है। अभिग्रह उच्छृंखल और अनियंत्रित मन के निग्रह का प्रयोग है, संकल्प का प्रयोग है। मुनि के परिप्रेक्ष्य में इसे भिक्षा के साथ जोड़ा गया है। उसके चार प्रकार हैं- द्रव्य अभिग्रह, क्षेत्र-अभिग्रह, काल-अभिग्रह और भाव- अभिग्रह।

द्रव्य-अभिग्रह - भिक्षा में अमुक द्रव्य (चावल, दाल आदि) मिलेगा तो भिक्षा ग्रहण करूंगा, अन्यथा नहीं। अमुक द्रव्य के सिवा कुछ भी ग्रहण नहीं करूंगा- यह द्रव्य संबंधी अभिग्रह है।

क्षेत्र-अभिग्रह - अमुक स्थान में भिक्षा मिलेगी तो ग्रहण करूंगा अन्यथा नहीं, जैसे- भिक्षा देने वाली महिला देहली को अपने दोनों पैरों के मध्य किए हुए खड़ी खड़ी भिक्षा दे तो भिक्षा लूंगा, अन्यथा नहीं।

काल-अभिग्रह- अमुक समय में भिक्षा मिलेगी तो उसे स्वीकार करूंगा, अन्यथा नहीं।

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री भारीमालजी युग

मुनिश्री शिवजी (लावा) दीक्षा क्रमांक : 78

मुनिश्री उच्च साधक और उग्र तपस्वी थे। आपकी तपस्या के लम्बे आंकड़े आश्चर्यजनक, जन-जन को विस्मित करने वाले तथा भगवान महावीर के युग की याद दिलाने वाले हैं। उपवास/414, 2/22, 3/34, 4/8, 5/11, 6/7, 7/3, 8/6, 9/3, 10/3, 11/3, 12/3, 13/2, 14/3, 15/3, 16/2, 20/2, 30/12, 32/1, 36/2, 40/1, 45/9, 50/2, 55/1, 60/5, 75/2, 90/1 ये सभी तपस्यार्ये पानी के आगार से तथा 186/1 आछ के आगार से की। मुनिश्री ने रात्रि में एक चोलपट्टे के अतिरिक्त कुछ भी ओढ़ने, पहनने के काम में नहीं लिया। पश्चिम रात्रि में खड़े-खड़े कायोत्सर्ग व ध्यान करते। उष्णकाल में तप्त शिला तथा रेत पर लेटकर आतापना लेते।

- साभार: शासन समुद्र -

अप्रैल 2024

सप्ताह के विशेष दिन

29 अप्रैल

भगवान
कुन्धुनाथ दीक्षा
कल्याणक

30 अप्रैल

भगवान
शीतलनाथ च्यवन
कल्याणक

3 मई

भगवान
नमिनाथ निर्वाण
कल्याणक

4 मई

आचार्यश्री
महाप्रज्ञ जी 15वाँ
महाप्रयाण दिवस

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स समाचार प्रेषकों से निवेदन

- संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र 'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स' में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
- समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
- कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
- समाचार केवल पीडीएफ फॉर्मेट में इस मेल एड्रेस abtyptt@gmail.com पर ही भेजें।

निवेदक

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संक्षिप्त खबर

कैंसर अवेयरनेस कार्यक्रम का हुआ आयोजन

इरोड। तेरापंथ महिला मंडल इरोड द्वारा कैंसर अवेयरनेस कार्यक्रम का सफलता पूर्वक आयोजन किया गया। नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम प्रारम्भ करने के पश्चात मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत का संगान किया। सभी शाखाओं से समागत महिला मंडल की अध्यक्षाओं का स्वागत किया गया। स्थानीय तेरापंथ महिला मण्डल की अध्यक्षा पिकी भंसाली ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में सर्व प्रथम 'जीत की कहानी, अपनी जुबानी' के तहत कैंसर सर्वाइवर्स भारती डागा व सुंदरी जैन ने अपने अनुभव व्यक्त किए। सैथिल हॉस्पिटल की डॉ. गोकुल प्रिया ने लोगों को कैंसर के बारे में जागरूक किया। उन्होंने बताया कि दो प्रकार के कैंसर, ब्रेस्ट और सर्वाइकल, महिलाओं में तेजी से फैलते जा रहे हैं। समय पर इनका पता लग जाने पर इलाज भी हो सकता है। मण्डल अध्यक्षा पिकी भंसाली एवं उपाध्यक्ष मंजू बोथरा ने डॉक्टर्स का सम्मान किया। लगभग 100 बहनों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यक्रम का सुंदर संचालन प्रज्ञा सुराणा ने किया।

वृहद मंगल पाठ का आयोजन

नालासोपारा, मुंबई। युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की विदुषी सुशिष्या साध्वी पुण्ययशा जी आदि के सान्निध्य में कच्छी विसा मारु भवन के प्रांगण में विक्रम संवत् २०८१ के शुभारंभ के उपलक्ष्य में वृहद मंगल पाठ का आयोजन किया गया। साध्वीश्री जी ने कहा कि नव वर्ष आपके जीवन में अध्यात्म की ऊर्जा भरे, इस वर्ष में धर्म-ध्यान, त्याग-तपस्या से अपने जीवन को सफल बनाएं। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, तेरापंथ युवक परिषद, किशोर मंडल, तेरापंथ महिला मंडल, कन्या मंडल, अणुव्रत क्षेत्रीय संयोजक, ज्ञानशाला परिवार एवं वसई, विरार एवं आसपास के श्रावक समाज की सराहनीय सहभागिता रही। आभार ज्ञापन सभा मंत्री पारस बापना ने किया।

गुरु दर्शन यात्रा

विजयनगर। तेरापंथ युवक परिषद् विजयनगर का ५१ सदस्यीय गुरु दर्शन यात्रा संघ श्री चरणों में पहुंचा। इस अवसर पर अभातेयुप अध्यक्ष रमेश डागा ने तेयुप विजयनगर को लगातार सेवा, संस्कार और संगठन में उल्लेखनीय कार्य करने वाली परिषद बताया। अभातेयुप उपाध्यक्ष पवन मांडोट ने विजयनगर द्वारा संचालित एटीडीसी, प्रज्ञा केंद्र, हॉस्टल, मेडिकल स्टोर आदि गतिविधियों की जानकारी निवेदित की। अभातेयुप पूर्व अध्यक्ष विमल कटारिया, बैंगलोर संभाग प्रमुख एवं संघ यात्रा संयोजक अमित दक ने अपने विचार व्यक्त किए। अध्यक्ष राकेश पोकरणा ने अपने आप को भाग्यशाली बताते हुए सम्पूर्ण परिषद परिवार की ओर से कृतज्ञता के भाव अर्पित किए एवं बढ़ते कदम पुस्तिका गुरुदेव को निवेदित की। विजय स्वर संगम और प्रबंध मंडल ने गीत - 'तेरापंथ का परचम लहरा दो' का संगान किया। आचार्य प्रवर ने शुभाशीष प्रदान करते हुए भावना अनुसार त्याग प्रत्याख्यान करवाए। साध्वीप्रमुखा जी ने सबको नवकार महामंत्र की महत्ता बताते हुए प्रतिदिन माला फेरने की प्रेरणा प्रदान की। दोपहर में संघ ने मुख्य मुनि के दर्शन सेवा का लाभ लिया।

❖ व्यक्ति नशे के दुष्परिणामों को समझ ले तो नशे की लत से छुटकारा मिल सकता है। गलत कार्यों में व्यक्ति धन का नियोजन क्यों करें?

-आचार्य श्री महाश्रमण

कोलकाता स्तरीय त्रिवेणी-2024 का किया गया आयोजन

लिलुआ।

आचार्यश्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि जिनेशकुमार जी के सान्निध्य में और तेरापंथ युवक परिषद, लिलुआ के मार्गदर्शन में तेरापंथ किशोर मंडल, लिलुआ द्वारा कोलकाता स्तरीय त्रिवेणी-2024 आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम में पूरे कोलकाता, हावड़ा और उपनगरीय क्षेत्र से कुल 85 किशोरों ने अपनी सहभागिता दर्ज कराई। तेरापंथ युवक परिषद, लिलुआ के अध्यक्ष संदीप दुधेड़िया, मंत्री दीपक बागरेचा ने कार्यक्रम प्रायोजक पुखराज बैद एवं मुख्य अतिथि प्रसिद्ध भारतीय क्रिकेटर श्रीवत्स गोस्वामी का स्वागत और सम्मान किया।

कार्यक्रम की शुभ शुरुआत मुनि कुणाल कुमार जी के गीत से हुई। उसके

पश्चात् मुनि जिनेशकुमार जी ने उपस्थित सहयोगी नमन जम्मड़ एवम क्षेत्रीय किशोरों को जैन धर्म और उसके महत्व को समझाया। तत्पश्चात मुनिश्री ने सभी किशोरों को उनकी जिज्ञासा पूछने का अवसर दिया। अनेकों किशोरों ने अपने मन के जिज्ञासाओं को मुनिश्री के सामने रखा और मुनिश्री ने उन सभी जिज्ञासाओं का समाधान किया। प्रायोजक पुखराज बैद ने भी किशोरों का उत्साहवर्धन किया। कार्यक्रम में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के कार्यसमिति सदस्य सुनील दुगड़, क्षेत्रीय



इस कार्यक्रम में पूरे कोलकाता, हावड़ा और उपनगरीय क्षेत्र से कुल 85 किशोरों ने अपनी सहभागिता दर्ज कराई।

परिषदों के पदाधिकारी भी उपस्थित रहे। लिलुआ सभा, बेलूड़ सभा, तेयुप लिलुआ के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं की कार्यक्रम में उपस्थिति रही। कार्यक्रम के अंत में तेरापंथ युवक परिषद, लिलुआ के मंत्री दीपक बागरेचा ने सभी उपस्थित किशोरों का आभार ज्ञापन किया और कार्यक्रम के दोनों संयोजक जय बांठिया और कुणाल चोपड़ा एवम् उनकी पूरी टीम को साधुवाद दिया। कार्यक्रम का संचालन कुणाल चोपड़ा ने किया।

आध्यात्मिक मिलन में झलकी प्रसन्नता की अनुभूति

शालीमार बाग।

'शासनश्री' साध्वी रतनश्रीजी एवं साध्वी संगीतश्रीजी का शालीमार बाग के गोयल भवन में हुआ। समागत साध्वियों का स्वागत करते हुए 'शासनश्री' साध्वी रतनश्रीजी ने कहा- आज इन साध्वियों से मिलकर मैं हर्ष विभोर हो गई हूँ। हम सब एक हैं, एक ही गगन के चमकते हुए सितारे हैं, एक ही संघ मंदिर जलते हुए दीपक हैं। हम सबका एक ही उद्देश्य है- संघ की सौरभ को दिग् दिगन्त में फैलाना।

'शासनश्री' साध्वीश्री सुव्रतांजी ने कहा मैं इनका तहेदिल से स्वागत करते हुए कहती हूँ कि ये साध्वियां पूर्वांचल

और दक्षिणांचल की प्रलम्ब यात्रा करके आई हैं। अब दिल्ली में दिल खोलकर काम करना है। एक-एक परिवार की संभाल करनी है और शाहदरा चतुर्मास को सफलतम बनाना है। साध्वी संगीतश्री जी ने अपनी भावाभिव्यक्ति में कहा- आपके दर्शन पाकर मैं अनन्य प्रसन्नता की अनुभूति कर रही हूँ। आप अपने अनुभवों से मुझको लाभान्वित करें एवं ऐसा आशीर्वाद दें कि राजधानी में मैं अपने लक्ष्यों को पूर्ण करूँ एवं संघ की ख्याति फैलाऊँ। 'शासनश्री' साध्वी सुमनप्रभाजी, साध्वी कार्तिकप्रभाजी एवं साध्वी चिंतनप्रभाजी ने सुमधुर स्वरो से गीत

का संगान कर साध्वी परिवार का स्वागत किया। साध्वी शांतिप्रभाजी, साध्वी कमलविभाजी एवं साध्वी मुदिताश्रीजी ने भी अपनी प्रसन्नता की अभिव्यक्ति एक भावपूर्ण गीत के द्वारा की। तेरापंथ महासभा के उपाध्यक्ष संजय खटेड़, तेरापंथ सभा की अध्यक्षा सज्जन देवी गिड़िया, आदि ने साध्वी वृंद का स्वागत किया। ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं एवं महिला मंडल की महिलाओं ने सुमधुर गीत से समागत साध्वियों का हार्दिक अभिनंदन किया। शालीमार सभा के मंत्री अनिरुद्ध जैन ने कार्यक्रम का संयोजन किया।

फिजिकल मिशन इंपावरमेंट कार्यक्रम का आयोजन

अमराईवाड़ी।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद अमराईवाड़ी द्वारा तेरापंथ टास्क फोर्स फिजिकल मिशन एम्पावरमेंट का सफल आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत तेरापंथ युवक परिषद की जानकारी देते हुए तेयुप अमराईवाड़ी के अध्यक्ष हितेश चपलोट द्वारा की गई। उन्होंने तेयुप के त्रिआयामी

सेवा, संस्कार और संगठन की संक्षेप जानकारी दी। कार्यक्रम में सूरत से पधारे टास्क फोर्स ट्रेनर जीनियस मेहता का परिचय मंत्री सुनील चिप्पड़ ने दिया। टास्क फोर्स ट्रेनर जीनियस मेहता ने बहुत ही शानदार तरीके से सभी को आपदा के समय करणीय और अकरणीय कार्यों की जानकारी विस्तार से दी। संभागियों ने अपने भाव प्रस्तुत

करते हुए तेयुप के इस कार्य की सराहना की एवं अपने सुझाव व्यक्त किये। परिषद् द्वारा जीनियस मेहता का सम्मान किया गया। तेयुप अमराईवाड़ी के सदस्य जयेश सिंघवी का कार्यक्रम हेतु सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ। अन्त में तेयुप कोषाध्यक्ष दिनेश टुकलिया ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम में करीब 50 सदस्यों की उपस्थिति रही।



व्यक्तित्व विकास कार्यशाला में सीखे संतुलित एवं सुखी जीवन के गुर

अहमदाबाद।

संतुलित जीवन, सुखी जीवन का सफल आयोजन युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की सुशिष्या 'शासनश्री' साध्वी सरस्वती जी आदि ठाणा-5 के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, शाहीबाग, अहमदाबाद में हुआ।

कार्यशाला की शुभ शुरुआत साध्वीश्री के द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुई। स्वागत वक्तव्य में तेयुप अध्यक्ष कपिल पोखरना ने उपस्थित संभागियों को संतुलित जीवन जीने की प्रेरणा दी। साध्वी संवेगप्रभा जी ने भगवान महावीर के सूत्रों पर आधारित संतुलित जीवन जीने की प्रेरणा दी।

'शासनश्री' साध्वी सरस्वती जी ने दुःख और प्रमाद को छोड़कर आगमों में वर्णित सिद्धांतों पर आधारित संतोषी जीवन जीने की प्रेरणा दी। कार्यशाला

में वक्ता अनिला सेठीया ने वर्क लाइफ बैलेंस के सिद्धांत को विस्तृत और प्रायोगिक तरीकों से समझाया। संभागियों से व्हील ऑफ लाइफ की प्रायोगिक अभ्यास करवाकर संभागियों को पर्सनल एवं प्रॉफेशनल जीवन के संतुलन बनाने के गुण सिखाये। आपने कहा कि अपनी प्राथमिकता तय कर जीवन जीने की कला ही संतुलित जीवन, सुखी जीवन है।

कार्यशाला के संयुक्त वक्ता ललित बेगवानी ने पारिवारिक और सामाजिक जीवन के कार्यों को प्राथमिकता अनुरूप संतुलन बिठा कर सुखी जीवन जीने के सिद्धांतों के बारे में बताया। आपने बताया जब इंसान की लालसा बढ़ती जाती है और वह कुछ पाने के लिए परिवार को अनदेखा करने लग जाता है तब उसके जीवन का संतुलन बिगड़ने लग जाता है और

धीरे-धीरे निराशा की तरफ बढ़ने लगता है। कार्यशाला में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा अहमदाबाद के अध्यक्ष कांतिलाल चोरडिया, मंत्री विकास पितलिया, अभातेयुप सदस्य पंकज डांगी, तेयुप अहमदाबाद पदाधिकारी गण, सीपीएस नेशनल ट्रेनर महावीर भटेवरा एवं समाज के गण-मान्य व्यक्तियों की गरिमामय उपस्थिति रही।

कार्यशाला में करीब 80 संभागियों ने भाग लिया। सभी ने अभातेयुप की इस कार्यशाला की सराहना की और तेयुप अहमदाबाद को निरंतर ऐसे कार्यशालाएं लगाने के लिए निवेदन किया। कार्यशाला का कुशल संचालन संयोजक विशाल पींचा ने एवं आभार ज्ञापन जिकेश भरसारिया ने किया। कार्यशाला को सफल बनाने में संयोजक एवं टीम तेयुप अहमदाबाद का विशेष श्रम रहा।

'सीपीएस' दीक्षांत समारोह का भव्य आयोजन

औरंगाबाद।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद, औरंगाबाद द्वारा आयोजित सप्त दिवसीय कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग कार्यशाला का दीक्षांत समारोह अभातेयुप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री अमित सेठीया की अध्यक्षता में आयोजित हुआ। सीपीएस के 28 संभागियों ने विभिन्न विषयों पर अपनी प्रस्तुति दी, जिसमें से टॉप फाइव का चयन किया गया। सभी संभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किया

गया। उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। परिषद द्वारा अनुदान दाता परिवार का सहयोग के लिए सम्मान किया गया। संभागियों के परिजनों एवं तेरापंथ समाज ने भी उत्साहवर्धन हेतु अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। तेरापंथ युवक परिषद औरंगाबाद अध्यक्ष अंकुर लुणिया, मंत्री मयूर आच्छा, तेयुप एवं किशोर मंडल के पदाधिकारी और कार्यकर्ताओं ने अपने परिश्रम से कार्यक्रम को सफल बनाया। मुख्य अतिथि के रूप में औरंगाबाद तेरापंथ सभा के अध्यक्ष कौशिक सुराणा,

विशिष्ट अतिथि के रूप में सीपीएस प्रोविजनल नेशनल ट्रेनर अखिल मारू एवं सीपीएस के राष्ट्रीय सह प्रभारी सोनू डागा की उपस्थिति रही। तेरापंथ महिला मंडल, टीपीएफ, अणुव्रत समिति, आचार्यश्री महाश्रमण अक्षय तृतीया प्रवास व्यवस्था समिति, भिक्षु फाउंडेशन चैरिटेबल ट्रस्ट, श्री भगवान महावीर जन्म कल्याण महोत्सव समिति औरंगाबाद, श्री खंडेलवाल दिगंबर जैन पंचायत आदि संस्थाओं के पदाधिकारियों की गरिमामय उपस्थिति रही। कार्यक्रम का आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री मयूर आच्छा ने किया।

दो धाराओं का आध्यात्मिक मिलन

कांचीपुरम।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की सुशिष्या डॉ. साध्वी गवेषणाश्री जी आदि का शंकराचार्य मठ के मठाधिपति विजयेन्द्र सरस्वती स्वामीजी के साथ मिलन हुआ। अनेक विषयों पर धर्म-चर्चा करते हुए मठाधीशपति ने कहा- भारत के विकास के साथ महिला शिक्षा का भी विशेष महत्त्व है। पर्यावरण

संरक्षण भी विकास का आयाम होना चाहिए। वर्तमान में संस्कार संपन्न महिला ही परिवार का पोषण कर सकती है। विजयेन्द्र स्वामी ने कहा- आपके चातुर्मास में माधावरम् आकर स्कूली कार्यक्रम करने की इच्छा है।

डा. साध्वी गवेषणाश्री जी ने कहा- आचार्यश्री महाश्रमणजी की सारी शिष्याएं मानवता के लिए समर्पित हैं। इसके लिए वह नैतिकता, सद्भावना व

नशामुक्ति का अभियान लेकर चल रहे हैं। महिलाओं को शिक्षण देने से पहले संस्कारों की शिक्षा अवश्य दें।

जैन लोग प्रायः नशा व मांसाहार से मुक्त रहते हैं। हिंदू लोगों में भी आप एक नशामुक्ति व मांसाहार वर्जन का अभियान चलाएं तो पुनः हमारे भारत का विकास हो सकता है। तेरापंथ समाज के विशिष्ट श्रावक भी इस चर्चा-परिचर्चा में उपस्थित थे।

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी द्वारा

वर्ष 2024 हेतु नवीन

घोषित चातुर्मास

साध्वी सत्यप्रभा जी : असाढा

नए वर्ष पर हुआ अनुष्ठान सहित वृहद मंगलपाठ

बांद्रा (मुम्बई)।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमारजी के सान्निध्य में गणपति मंदिर के विशाल प्रांगण में नमस्कार महामंत्र का जाप, उवसगहरं स्तोत्र, मंगल भावना के समुच्चारण के पश्चात आचार्यश्री तुलसी द्वारा निर्धारित नवान्हिक अनुष्ठान का सामूहिक उच्चारण करते हुए मुनि श्री ने फरमाया कि नूतन वर्ष हमारे लिए शुभ भविष्य का सूचक बने। इसके लिए हमें कुछ बातों का सलक्ष्य ध्यान रखना है। सबकी प्रामाणिकता बनी रहे, सबके साथ मृदु व्यवहार हो, कर्तव्य परायणता बनी रहे।

जप-तप के साथ इनका योग सोने में सुहागे वाली कहावत को चरितार्थ करने

वाला सिद्ध होगा। कार्यक्रम में सभा, महिला मंडल के साथ कन्यामंडल, किशोर मंडल, ज्ञानशाला के बच्चों का भी अच्छा सहयोग रहा।

युवकों का उत्साह सबके लिए प्रेरणास्पद था। कार्यक्रम में मुम्बई सभा के अध्यक्ष मदनलाल तातेड़, मनोहर गोखरू ने सबको नये वर्ष की शुभकामनायें दी।

बांद्रा के मुकेश नौलखा ने आगंतुकों को साधुवाद देते हुए सभा की ओर से आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम में खार, बांद्रा, धारावी, दादर, सांताक्रुज, वर्ली आदि क्षेत्रों के लोगों ने समय पर पहुंचकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। कार्यक्रम में सैकड़ों लोगों ने सामायिक के बेले किये। उपवास, एकासन के भी प्रत्याख्यान हुए।

वर्षी तप अभिनन्दन समारोह

भीलवाड़ा।

जैन धर्म के आद्य प्रवर्तक भगवान ऋषभ प्रभु ने भौतिक सुख सुविधा को त्याग कर वैराग्य जीवन जीते हुए सत्य, अहिंसा का प्रचार किया। साधिक एक वर्ष तक भूखे रहकर कठोर तप किया और अपने कर्म बन्धन तोड़े। अपने पौत्र श्रेयांस के हाथों से इक्षु रस से पारणा किया।

ऋषभ युग से लेकर अब तक ये वर्षीतप अपनी महत्ता लिए हुए है। उसी क्रम में तेरापंथ महिला मंडल भीलवाड़ा द्वारा वर्षीतप करने वाले तपस्वियों की अनुमोदना एवं अभिनन्दन में आज तेरापंथ भवन नागौरी गार्डन में वर्षीतप अभिनन्दन कार्यक्रम आयोजित किया

गया। कार्यक्रम में भीलवाड़ा क्षेत्र के वर्षीतप करने वाले तपस्वियों को आमंत्रित कर तप अनुमोदना में चौबीसी, गीतिका आदि का संगान किया गया।

महिला मंडल अध्यक्ष मैना कांटेड़ ने तपस्वियों का अभिनन्दन एवं स्वागत करते हुए सभी के प्रति आध्यात्मिक शुभ मंगल कामनाएं प्रकट की। वर्षी तप करने वाले भाई बहनों की तपांजलि में अध्यक्ष मैना कांटेड़, मंत्री अमिता बाबेल एवं परिवार की बहिनों ने भावों से तप अभ्यर्थना की।

सभा अध्यक्ष जसराज चोरडिया, अणुविभा उपाध्यक्ष निर्मल गोखरू ने अभिनन्दन के क्रम में विचार व्यक्त करते हुए सभी तपस्वी भाई बहिनों को आध्यात्मिक मंगल कामनायें दी।

हमें जिन्दगी रूपी नायाब तोहफा मिला है

डिजाइन योर लाईफ वर्कशॉप का आयोजन

नोएडा।

साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में बोथरा भवन में नोर्थ जोन जीटो के तत्वावधान में डिजाइन योर लाईफ पर एक वर्कशॉप आयोजित हुई, जिसमें जीटो मेम्बर्स की शानदार उपस्थिति रही। बोथरा भवन में आयोजित इस कार्यक्रम में जीटो के अतिरिक्त सैकड़ों लोगों ने कार्यक्रम को भव्यता प्रदान की।

साध्वी अणिमाश्रीजी ने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें कुदरत से जिन्दगी रूपी नायाब तोहफा मिला है। इस तोहफे की सुन्दर डिजाइन करना हमारे हाथ में है। जिन्दगी को सजाने संवारने का काम कोई दूसरा नहीं करेगा, हमें ही करना है।

हम अपनी ऊंची एवं बड़ी सोच के द्वारा जिन्दगी रूपी इमारत को गगनचुम्बी बनाएं। जिस व्यक्ति की सोच बड़ी होती है, वही दुनिया में बड़ा नाम एवं बड़ा काम कर सकता है। छोटी सोच वाले

व्यक्ति कभी कद छोटा होने से कोई फर्क नहीं पड़ता किन्तु सोच हमेशा बड़ी रखनी चाहिए जो आपकी जिन्दगी को संवार सकती है।

साध्वीश्री ने कहा हम अपनी जीवन रूपी बगिया में करुणा एवं अपनत्व के फूल खिलाए। ये फूल आपकी जिन्दगी को सौरभमय बना देंगे। जीवन रूपी मंदिर में धैर्य का दीपक जलाएं। यह दीपक पूरी जिन्दगी को रोशन कर देगा।

डॉ. साध्वी सुधाप्रभाजी ने अपने वक्तव्य में कहा- हम अपनी जिन्दगी में सदगुणों का एवं सकारात्मक सोच का सूरज उगाएं। सुख, शांति एवं आनन्दमय जीवन जीने के लिए सकारात्मक सोच के मालिक बनें।

साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने मंच का कुशल संचालन करते हुए कहा जिस व्यक्ति को सुख-दुख में सम रहना आ गया, वह अपनी जिन्दगी को संवार सकता है। सुख-दःख जीवन के मेम्बर नहीं, मेहमान हैं, आए हैं और एक दिन चले जाएंगे, इसलिए सम रहने का अभ्यास करें।

साध्वी समत्वयशाजी ने सुमधुर गीत का संगान कर पूरी परिषद को बांध लिया।

नोर्थ जॉन जीटो के चेयरमेन बजरंग बोथरा, रजत बोथरा, रणधीर बैद, मंजु जैन, ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम की शुरुआत में मंगल संगान महिलामंडल द्वारा एवं अंत में लक्ष्मीपत बोथरा ने आभार ज्ञापन किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ
टाइम्स

कद छोटा होने से कोई फर्क नहीं पड़ता किन्तु सोच हमेशा बड़ी रखनी चाहिए जो आपकी जिन्दगी को संवार सकती है।

शासनमाता का पुण्य स्मृति दिवस

पालघर।

'शासनश्री' साध्वी जिनरेखाजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन पालघर में महिला मंडल अध्यक्ष संगीता चपलोट के मंगलाचरण से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। श्रोताओं को संबोधित करते हुए साध्वीश्री ने कहा- आज शासनमाता संघ महानिदेशिका साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी का द्वितीय स्मृति दिवस है।

भगवान महावीर ने कहा- मानव शरीर नश्वर है। जन्म के साथ मृत्यु निश्चित है। जन्म और मृत्यु के बीच जो धारा है, वह जीवन धारा निर्मल बने, उपयोगी बने यह विशेष बात है। कलकत्ता में जन्मी कला 19 वर्ष की उम्र में गणाधिपति पूज्य

गुरुदेव आचार्य तुलसी के कर कमलों से केलवा में दीक्षित हुई। गणाधिपति गुरुदेव तुलसी द्वारा आपको साध्वीप्रमुखा के रूप में मनोनीत किया गया। आपने नारी शक्ति के उत्थान, प्रशिक्षण, साहित्य निर्माण आदि-आदि अवदान दिये।

साध्वीश्री ने अनेक ऐतिहासिक घटना प्रसंगों का उल्लेख करते हुए कहा कि शासनमाता के साहित्य को पढ़कर जीवन में विनम्रता का भाव, वाणी में मधुरता, अप्रमत्त जीवन शैली का प्रवेश हो सकता है। आपका जीवन धर्मसंघ को प्रेरणा पाथेय देता रहेगा। साध्वी मार्दवयशाजी ने कहा-शासन माता का समझाने का तरीका विलक्षण था। छोटी-छोटी बात पर आपका विशेष ध्यान रहता था। साध्वी

श्वेतप्रभाजी ने कहा- मेरी दीक्षा के साथ संसार पक्षीय माता की दीक्षा संभव नहीं थी, पर शासन माता के प्रयास से गुरुदेव तुलसी ने दीक्षा की स्वीकृति प्रदान की व हमारी दीक्षा साथ में हो गयी। उनके उपकारों को मैं कैसे भूला सकती हूं। साध्वी धवलप्रभाजी ने कहा- शासनमाता बाल साधुओं का विशेष ध्यान रखते, उनको प्रशिक्षित करने, मार्गदर्शन देने में आपकी अहम भूमिका रहती।

सभाध्यक्ष देवीलाल सिंघवी, भगवान सिंघवी, गजसुख बोराणा, शांतीलाल सिंघवी आदि वक्ताओं ने भाषण व गीत के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रस्तुत की। संगीता बाफना ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया।

शुभ संकल्पों के साथ करें नववर्ष का प्रारंभ

चेन्नई/कडलूर। तमिलनाडु के कडलूर शहर में चिंतामणि पार्श्वनाथ जैन मंदिर परिसर के जैन भवन में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि दीपकुमार जी के सान्निध्य में विक्रम संवत् 2081 के प्रारंभ के अवसर पर मुनिश्री का उद्बोधन एवं मंगलपाठ का

आयोजन श्री जैन श्वेताम्बर जैन संघ कडलूर द्वारा किया गया। मुनि दीपकुमार जी ने कहा कि नया वर्ष शुभ संदेश लेकर आता है। नयापन सबको पसंद है। नववर्ष का प्रारंभ हम शुभ संकल्पों के साथ करें। जैसे हमारे संकल्प होंगे, वैसे हम बनते जाएंगे। समय बीत जाता है क्योंकि समय

के पांव नहीं, पंख होते हैं। यह वर्ष हम सब के लिए मंगलकारी, शुभकारी और कल्याणकारी बने। मुनिश्री ने नये वर्ष पर मंगलपाठ का श्रवण कराया। मुनि काव्यकुमार जी ने कहा कि माया को ऋजुता से जीतें। जो माया करता है, वह स्वयं अपनी आत्मा का अहित करता है।

संक्षिप्त खबर

विश्व स्वास्थ्य दिवस पर स्वास्थ्य जांच शिविर

तेयुप राजाजीनगर। विश्व स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायनोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम में विभिन्न डॉक्टरों का परामर्श शिविर आयोजन किया गया, जिसमें गैस्ट्रोएंटेरोलॉजिस्ट डॉ. विद्यासागर रामप्पा, हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉ. वरुण, स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. मंजुला गौड़ा, त्वचा विशेषज्ञ डॉ. सुनील कुमार एवं दंत चिकित्सक डॉ. अंजना ने अपनी सेवाएं प्रदान की।

शिविर की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई। स्वास्थ्य जांच शिविर के अंतर्गत निःशुल्क रैंडम ब्लड शुगर एवं रक्तचाप जांच की गई। इस शिविर में कुल 26 सदस्य लाभान्वित हुए। तेयुप से अध्यक्ष कमलेश गन्ना, कमलेश चौरडिया एवं राजेश देरासरिया ने अपनी सेवाएं प्रदान की।

सामूहिक सामायिक

उत्तर कोलकाता। आओ हम सब मिल कर करें सामायिक आराधना तथा अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के मैं हूं सामायिक साधक आयाम के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद् उत्तर कोलकाता के द्वारा 'हर शनिवार सामायिक, हर घर सामायिक' करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इसी के तहत शनिवार शाम की सामायिक राजेंद्र संचेती के निवास स्थान पर की गई। सामायिक में कार्यकर्ताओं की अच्छी उपस्थिति रही।

नवान्हिक जप अनुष्ठान का आयोजन

नोखा। 'शासनगौरव' साध्वी राजीमतीजी के पावन सान्निध्य में नवरत्रि के अवसर पर नवान्हिक जप अनुष्ठान का आयोजन किया गया। साध्वी पुलकित यशाजी ने मंत्रोच्चार के साथ विधिवत प्रारंभ किया और कहा- एक स्थान, एक लय और शुद्ध उच्चारण से किया गया जप द्रव्य और भाव से लाभकारी, हितकारी है। प्रारंभ में साध्वी विधिप्रभाजी ने भक्तामर स्तोत्र के पद्यों का विशेष विवेचन करते हुए आचार्य मागतुंग की रचना को चमत्कारी व लाभकारी बताया।

'पौध को सींचे' कार्यशाला का आयोजन

चेन्नई/कांचीपुरम। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल के तत्वावधान में तेरापंथ महिला मण्डल की आयोजना में, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या डॉ. साध्वी गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में कांचीपुरम में 'पौध को सींचे' कार्यशाला का आयोजन हुआ। साध्वीश्री के नमस्कार महामंत्र समुच्चारण के बाद, महिला मंडल की बहिनों ने प्रेरणा गीत का संगान किया।

डॉ. साध्वी गवेषणाश्रीजी ने कहा कि माँ बच्चों की प्रथम पाठशाला होती है, संस्कारों का बीजारोपण करने वाली होती है। संस्कृति संवर्धन की संवाहक होती है। साध्वीश्री ने विशेष आह्वान करते हुए कहा कि महिला मंडल की सदस्यों को परिवार में बच्चों पर विशेष ध्यान देना चाहिए। उनको संस्कारों की शिक्षा पर बल देने के साथ, चिंता को चिंतन में परिवर्तन करने का प्रयास करना चाहिए। साध्वीश्री ने कहा कि बच्चों को शाकाहार एवं मांसाहार की जानकारी दें और उन्हें मांसाहार से दूर रहने की शिक्षा दें। साध्वीश्री ने सभी महिलाओं को आध्यात्मिक संकल्प दिलवाये। साध्वी मयंकप्रभा जी ने बच्चों में संस्कार एवं मर्यादित जीवन शैली अपनाने के लिए सभी महिलाओं को प्रेरित किया। महिला मंडल अध्यक्ष प्रेमलता खांटेड ने स्वागत स्वर प्रस्तुत किये। सुनीता सिसोदिया ने आभार व्यक्त किया।

मोक्ष के लिए आवश्यक है अहंकार के हाथी से नीचे उतरना : आचार्यश्री महाश्रमण

नारायण गांवहाण ।

10 अप्रैल, 2024

भारतीय धर्म दर्शन में मोक्ष की बात आती है। जीवन का या आत्मा का परम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति है। सर्व दुःख मुक्ति, हमेशा के लिए एकांत सुख की प्राप्ति मोक्ष की स्थिति में होती है। साधुपन लिया जाता है और श्रावकत्व भी ग्रहण किया जाता है, इसके भी मूल में मोक्ष प्राप्ति का लक्ष्य होता है। मोक्ष की प्राप्ति में वे व्यक्ति असफल हो जाते हैं जो चण्ड होते हैं, गुस्सेल प्रकृति वाले होते हैं।

उपरोक्त विचार युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने नारायण गांवहाण में अपने मुख्य प्रवचन में समुपस्थित जन समूह को सम्बोधित करते हुए रखे।

आचार्य प्रवर ने आगे फरमाया कि भगवान महावीर के जीवन वृत्त में चण्ड कौशिक सर्प का प्रसंग आता है। पूर्व भव में चण्ड प्रकृति के कारण वह सर्प की योनि में पैदा हुआ। भगवान महावीर के संपर्क से, प्रतिबोध प्राप्त कर उसे जाति स्मरण ज्ञान हो गया। मनुष्य की योनि से तो वह पतन की ओर आया पर तिर्यंच गति से साधना कर वह देवगति में चला गया।

राम नहीं है, द्वेष नहीं है, किंचित भी संक्लेश नहीं है।

भावों में आवेश नहीं है, संतों का संदेश यही है।।

चण्डता, आवेश हमारे लिए अहितकर है। वीतरागता की स्थिति, क्षमा की स्थिति उच्च कोटि की होती है।

गुस्से वाला व्यक्ति मानो काले नाग की तरह डसने वाला होता है। एक सांप के जिसके पास दंत



नहीं है, गरल नहीं है वह शांति रखे वह सामान्य बात है और एक सांप जो दंत और गरल होते हुए भी क्षमा भाव रखे वह महान है।

कहा गया है-

महान वह होता है जो विष को पीना जानता है, आने वाली हर सांस को जीना जानता है। बातों में माहिर कई मिलेंगे दुनिया में, सम्मान वह पाता है जो समर वेला में सीना तानता है।।

आचार्य श्री ने आगे फरमाया कि कम खाओ, स्वस्थ रहो, गम खाओ, मस्त रहो और नम जाओ, प्रशस्त रहो। कम खाना, ऊनोदरी करना स्वास्थ्य के लिए अच्छा है। गम खाना अर्थात् मौके पर मौन और क्षमा धारण कर लेना। नम जाना अर्थात् जो

पूज्य हैं, आराध्य हैं, बड़े हैं उनके सामने नम जाना, प्रशस्त रहना।

एक आदमी झुकता है तो दूसरा भी झुक जाता है। दूसरों को झुकाना है तो पहले खुद को झुकना चाहिए। कहां झुकना और कहां नहीं झुकना, यह विवेक, सिद्धांत या प्रोटोकॉल की बात हो जाती है। अहंकार के कारण नहीं झुकना बढ़िया बात नहीं होती। खुद झुको तो दूसरे भी झुक सकेंगे।

शास्त्रकार ने बताया है कि क्षमा वीर आदमी का आभूषण है, सक्षमता होने पर भी क्षमा रखना बड़ी बात है। जो चण्ड होता है उसे मोक्ष नहीं मिलता। चण्डता के अतिरिक्त बुद्धि और धन का अहंकार भी मोक्ष मार्ग में बाधक बन सकता है। अहंकार के

हाथी से नीचे उतरना आवश्यक है।

यदि छोटा भाई पहले दीक्षित हो गया और बड़ा भाई बाद में साधु बना तो बड़ा भाई छोटे भाई को वंदन करें यह विधि है। पूज्यवर ने संयम पर्याय के बारे में बताते हुए कहा कि हमारे धर्मसंघ में मुनि राजकरण जी स्वामी पहले साधु बन गए थे। उनके पिता मुनि गंगाराम जी स्वामी बाद में साधु बने थे तो पिता के लिए भी बेटा वंदनीय बन गया। बड़ा भाई, छोटा भाई, पिता-पुत्र यह उम्र की बात संसार तक ठीक है, दीक्षा के संदर्भ में उम्र की बात गौण है।

हमारे मुनि ध्यानमूर्ति जी ने आठवें दशक में दीक्षा ली तो मैंने इनको पहले सावचेत किया था कि तुम इतनी बड़ी उम्र के हो, घर के मुखिया रहे हुए हो, इतने पढ़े-लिखे हो, दीक्षा ले लोगे तो छोटे संतों को भी वंदना करनी होगी। तब इनका मंतव्य था कि यह तो बहुत ही सौभाग्य की बात है।

आचार्य प्रवर ने प्रसंगवश फरमाया कि मुनि श्री मगनलाल जी स्वामी फरमाते थे कि अहंकार किस बात का करना है? हमारा जीव पता नहीं कहां-कहां गया होगा, कितनी बार बोर की गुठली बनकर लोगों के पैरों में आया होगा। हमारी आत्मा ने कहां-कहां जन्म लिया होगा। शास्त्र कार ने कहा कि बुद्धि का, ऋद्धि का घमंड नहीं करना चाहिए। जो चुगल खोर है, अनुशासित नहीं रहता है, विनय वान नहीं है, असंविभागी है वह भी मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकता है। हमें अहंकार से बचने का प्रयास करना चाहिए। अहंकार, अभिमान को छोड़कर निरहंकार बनने का प्रयास कर मोक्ष की दिशा में बढ़ने का प्रयास करना चाहिए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

जग उद्धारक ने आत्मा को निर्मल बनाने की दी प्रेरणा

तप, आर्जव और संयम से सिद्धि प्राप्ति की करें कामना: आचार्यश्री महाश्रमण

सूपा जीआईडीसी।

11 अप्रैल, 2014

मानवता के सजग प्रहरी आचार्य श्री महाश्रमण जी आज प्रातः सूपा जीआईडीसी क्षेत्र में पधारे। जनोद्धारक आचार्य प्रवर ने मंगल देशना प्रदान कराते हुए फरमाया कि इस मनुष्य जीवन में सबसे महत्वपूर्ण कार्य है- अपनी आत्मा को निर्मल बनाने की साधना करना। साधु, महंत, त्यागी बन जाना तो बहुत बड़ी बात है। अविवाहित अवस्था में साधु बन लंबे काल तक संयम पालना और भी बड़ी बात हो जाती है। गृहस्थ भी कई अच्छे साधक हो सकते हैं। जो साधु अमोहदर्शी बन जाते हैं, जिनके सामने वीतरागता रहती है, वे अपने कर्मों का क्षण कर देते हैं। वे तपस्या में निरत रहते हैं, लंबी तपस्या करते हैं।

कई प्रकार की तपस्या हो सकती



है। ऊनोदरी करना भी तप है। ऊनोदरी करने से शरीर भी स्वस्थ रह सकता है और साधना स्वाध्याय में भी मन लग सकता है। सामने मनोज्ञ मनोग्य पदार्थ हैं, जिसके प्रति आकर्षण है, उनको नहीं खाना, अस्वीकार कर देना साधना-संयम का प्रयोग है। विगय वर्जन कर देना, रस

परित्याग करना भी एक तरह की संयम की साधना है।

नहीं खाना अच्छी बात है, पर भीतर से आसक्ति भी छूट जाना और बड़ी बात है। बढ़िया चीज हमें मिलती है तो कम बढ़िया चीज के प्रति हमारा आकर्षण कम हो जाता है। परम तत्त्व का दर्शन हो जाने

पर पदार्थों के प्रति आसक्ति छूट जाती है। बाहर के साधनों से विरक्ति का भाव जाग जाए तो भीतर में आनन्द, संतोष का भाव उभर सकता है, सुख मिल सकता है।

स्वाध्याय, ध्यान, प्रायश्चित्त, विनय और वैयावृत्य भी तप हैं। नवदीक्षित छोटे साधु, रुग्ण साधु, तपस्वी साधु की भी

सेवा होती है, पदासीन की भी सेवा करनी चाहिए। सेवा के दस प्रकारों में सर्वप्रथम आचार्य की सेवा है।

इस प्रकार जो संयम में रत हैं, ऋजु हैं, सरल हैं, अमोहदर्शी हैं, तप में रत हैं, वे कर्मों का क्षयकर पाप कर्म को धुन डालते हैं। ऐसे जो सदा शांति में रहने वाले, ममकार से रहित रहने वाले हैं, आत्म विद्या से युक्त हैं, वे या तो देवलोक को या सिद्धि को प्राप्त होते हैं। हम सिद्धि प्राप्ति की कामना करें और तप, आर्जव, संयम आदि में विकास करें यह हमारे लिए श्रेयस्कर हो सकता है।

पूज्य प्रवर के स्वागत में, गुरुदेव विद्यालय की ओर से संतोष मगर एवं सभापति गंगाराम वेलकर ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

ज्ञान और आचार संपन्न पीढ़ी का हो निर्माण : आचार्य श्री महाश्रमण

सरदवाड़ी।

08 अप्रैल, 2024

परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी राजगंगांव से प्रातः विहार कर सरदवाड़ी स्थित अभिनव विद्यालय के प्रांगण में पधारे। पूज्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन में उपस्थित जनमेदिनी को सम्बोधित करते हुए फरमाया कि हमें इंसान बनने का अवसर प्राप्त हुआ है। चौरासी लाख जीव योनियों बताई गई हैं, उनमें यह मानव जीवन अपने आप में विशिष्ट होता है। इस मानव जीवन को प्राप्त कर जो आदमी धर्म की आराधना नहीं करता है, पाप के मार्ग पर चलता है, वह मानो परिश्रम से प्राप्त चिंतामणि रत्न को प्रमाद के कारण समुद्र में गिरा देता है।

मानव जीवन में आदमी साधु बन जाए, यह तो बहुत ही विशेष बात है परंतु हर कोई साधु बन जाए यह कठिन है। गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी अच्छे संस्कारों से युक्त जीवन जीना यह प्रयास विषय बन जाता है।

आज शिक्षा का कितना फैलाव हुआ है। कितने-कितने बच्चे पढ़ाई के लिए अपने देश से विदेश में जाते हैं। शिक्षा के प्रति सरकार भी जागरूक है, अभिभावक



एवं बच्चे भी जागरूक हैं। ज्ञान की दृष्टि से शिक्षा का बड़ा महत्त्व है। अनेक भाषाएं और विषय पढ़ाए जाते हैं, उनके साथ अच्छे संस्कार भी बच्चों में आए ऐसा प्रयास अपेक्षित है। विद्वान होने के साथ विनयशील होना यह सोने में सुहागा जैसी बात हो जाती है। विनय भी एक अच्छा संस्कार है, विद्यार्थी में विनय के साथ ईमानदारी का संस्कार भी आए। ईमानदारी सर्वोत्तम नीति है, इस नीति को व्यवहार

में भी लाएं। दुनिया में जितने भी महापुरुष हुए हैं भले धर्म, राजनीति या समाज के क्षेत्र में, कभी तो वे बच्चे ही थे। बच्चे ही आगे जाकर बड़े महापुरुष बनते हैं। बच्चे अच्छे, सच्चे और पक्के हों तो भविष्य अच्छा हो सकता है। शिक्षकों की भी एक अच्छी भूमिका बच्चों के संस्कार निर्माण में हो सकती है।

माता-पिता, धर्मगुरु, साहित्य भी बच्चों में अच्छे संस्कार देने का प्रयास कर सकते

हैं। चारों ओर से अच्छे संस्कारों की वर्षा होगी और अच्छे संस्कार बच्चों में पुष्ट हो जाएंगे, तो व्यक्तित्व निर्माण का बड़ा कार्य हो सकेगा। आचार्य श्री महाश्रमण जी के द्वारा जीवन विज्ञान का उपक्रम प्रस्तुत किया गया जिससे बच्चों में अच्छे संस्कार उर्वरित हो सकते हैं।

डिजिटल डिटॉक्स एवं ड्रग्स निवारण के संकल्प बच्चों में रहते हैं तो बच्चों के जीवन का क्रम अच्छा रह सकता है।

बच्चे झूठ-कपट और चोरी से बचे रहेंगे तो उनमें ईमानदारी के भाव पुष्ट होंगे। ईमानदारी के अभाव में विश्वास भी घटता है और आत्मा भी मलिन होती है।

विद्यालय का प्रांगण तो सरस्वती का मंदिर होता है। इस मन्दिर में ज्ञान की आराधना होती है। अच्छे संस्कार भी ज्ञान का ही एक अंग है। सुसंस्कार युक्त बच्चे हो, ज्ञान और आचार संपन्न पीढ़ी का निर्माण हो यह जिम्मेदारी शिक्षक वर्ग की हो जाती है।

अहिंसा महान धर्म है, अहिंसा का संस्कार भी बच्चों में रहे, बिना मतलब किसी को तकलीफ ना पहुंचाएं। संचालक भी इस ओर जागृत रहे कि विद्यालय में ज्ञान के साथ चरित्र का उन्नयन भी होता रहे। पूज्यवर के स्वागत में अभिनव विद्यालय की ओर से अध्यापकों ने अपनी भावना व्यक्त की।

पूज्य प्रवर के श्री चरणों में आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति मुंबई के शिष्टमंडल ने 'युगप्रधान की यशस्वी यात्रा - मुंबई प्रवास 2023-2024' पुस्तक गुरुदेव को समर्पित की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियां

